

जय गुरु देव

बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

सदैव स्मरणीय परम् सन्त बाबा जयगुरुदेव जी महाराज
एवं बाबा उमाकान्त जी महाराज

स्मारिका सन् 2012 से सन् 2022 तक

प्रार्थना

मेरे प्यारे गुरु दातार, मंगता द्वारे खड़ा ।
 मैं रहा पुकार-पुकार, मेहर कर देखो जरा ॥
 मोहिं दीजै भक्ति दान, काल दुःख बहुत दिया ।
 मेरे तड़प उठी हिय माहिं, दरस को तरस रहा ॥
 बरसाओ घटा अपार, प्रेम रंग दीजै बहा ।
 सुरति भोगै अमिय रस धार, तन मन होवै हरा ॥
 मेरा जीवन सफल हो जाए, तुम गुण गाऊँ सदा ।
 मैं नीच अधम नाकार, तुम्हारे द्वारे पड़ा ॥
 मेरी विनती सुनो धर प्यार, घट उमगाओ दया ।
 स्वामी जी पिता हमार, जल्दी पार किया ।
 जयगुरुदेव स्वामी पिता हमार, जल्दी पार करो ॥

आपके पढ़ने और दूसरों को पढ़वाने के लिए
 निःशुल्क सेवा

भूमिका

भारत जैसे धर्म परायण देश में ऋषि, मुनि, योगी, योगेश्वर व सन्तों का प्रादुर्भाव हमेशा होता रहा है। लगभग 700 वर्ष पहले सन्तमत की जानकारी कराने वाले धरती के प्रथम सन्त कबीर साहब जब से आए, आज तक देश में उनके बाद मालिक ने कई सन्तों फकीरों को इस धरती पर भेजा। जैसे कबीर जी, नानक जी, पलटू जी, तुलसीदास जी, गरीब साहब जी, राधास्वामी जी, विष्णुदयाल जी महाराज, घूरेलालजी महाराज, इसी श्रृंखला में तुलसीदास जी महाराज, एक विलक्षण महापुरुष, 'जयगुरुदेव' नाम प्रभु का बताने वाले जिनको बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के नाम से जाना जाता है, उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गांव में जन्म लेकर विभिन्न परिस्थितियों में जो भी किया जीवों के कल्याण के लिए ही किया। शरीर से कष्ट झेलते हुए अथक परिश्रम किया, गांव-गांव, शहर-शहर जाकर के जीवों को जगाया। उनके खान-पान, चाल-चलन को सही किया साथ ही साथ नामदान (भगवान की प्राप्ति का रास्ता) देकर, साधना कराकर कितने जीवों को पार कर दिया। मनुष्य शरीर में 100 वर्ष से अधिक तक उन्होंने जीवों के लिए काम किया और ज्येष्ठ कृष्ण पक्ष त्रयोदशी 18 मई 2012 को शरीर छोड़कर निजधाम चले गए।

सन्तमत की यह परंपरा है कि जब वक्त के सन्त सतगुरु चोला छोड़ते हैं तो आध्यात्मिक कार्य करने के लिए अपना उत्तराधिकारी नियुक्त करके जाते हैं। अतः शरीर छोड़ने से लगभग 5 साल पहले ही बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने, चालीसों साल शरण में रहे अपने परम शिष्य बाबा उमाकान्त जी महाराज को, अपने ना रहने के बाद पुराने प्रेमियों की संभाल करने तथा नए प्रेमियों को नामदान देने की घोषणा कर दी थी। बाबाजी के मथुरा आश्रम पर शरीर छूटने के बाद बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के शरीर त्यागते ही कुछ स्वार्थी लोगों ने षड्यंत्र करके आश्रम पर कब्जा कर लिया और संतमत की परंपरा को भूल करके एक लड़के के सिर पर पगड़ी बांधकर बाबाजी का उत्तराधिकारी घोषित कर दिया।

यह गुरुमुख गुरुभक्त लोगों को बिल्कुल पसंद नहीं आया। टकराहट की स्थिति देखकर बाबा उमाकान्त जी महाराज गुरु का नाम बदनाम न हो जाये, खून न बह जाये इसलिए सब कुछ छोड़कर दैनिक

प्रार्थना, ध्यान, भजन के अवसर पर उपस्थित संगत को संदेश देकर खाली हाथ निकल पड़े। बाबा उमाकान्त जी महाराज ने ठीक समय पर वही किया जो उनके गुरु बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने अपने गुरु के चोला छोड़ने पर किया था।

बाबा उमाकान्त जी महाराज जयपुर होते हुए उज्जैन, मध्य प्रदेश आ गए। जहाँ प्रेमियों के सहयोग से **आश्रम बनाया** व **'बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था' की स्थापना की** और बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के पद चिन्हों पर चलते हुए देश-विदेश में घूम-घूम कर के लोगों को शाकाहारी, नशामुक्त, मेहनतकश, चरित्रवान, देशभक्त रहने का उपदेश तो कर ही रहे हैं साथ ही साथ मनुष्य मंदिर में यानी जिस्मानी मस्जिद में ही गृहस्थ आश्रम में रहकर खुदा भगवान के दीदार, दर्शन करने का तरीका बताते हुए अपने गुरु का मिशन अर्थात् इस धरा पर सतयुग लाने, गौ हत्या, मानव हत्या, पशु-पक्षी की हत्या बंद कराने और लोगों को शाकाहारी, सदाचारी तथा नशामुक्त बनाने के कार्य में सतत प्रयत्नशील हैं।



साधना स्थल - बाबा जयगुरुदेव आश्रम उज्जैन (म.प्र.)

संत और संतमत

ऋषि, मुनि, अवतारी शक्ति, योगी, योगेश्वर से परे का दर्जा सन्तों का होता है।

सन्त दो तरह के होते हैं -

1. गुप्त सन्त
2. प्रगट सन्त।

जब सन्तमत नहीं था और प्रगट सन्तों का प्रादुर्भाव धरती पर नहीं हुआ था तब गुप्त सन्त इस धरती पर रहकर सम्हाल करते रहते थे। जब लोगों के कर्म ज्यादा खराब हुए तब सतपुरुष ने अपने 16 पुत्रों में से जोगजीत यानी कि कबीरदास जी को धरती पर भेजा। तब उन्होंने उस स्थान यानी सतलोक का भेद बताया जहां से शरीर चलाने वाली शक्ति यानी कि जीवात्मा नीचे मृत्युलोक में उतारी गई और सारा भेद खोल दिया तथा हर तरह की जानकारी हो गई। गुप्त सन्त सदैव पृथ्वी पर रहते हैं। पूरी धरती का भार उन्हीं पर रहता है लेकिन गुप्त सन्त जीवात्मा का उद्धार नहीं कर सकते, न ही रास्ता बताते हैं।

प्रगट सन्त ही जीवत्मा की मुक्ति-मोक्ष का रास्ता बताते हैं प्रगट सन्त और गुप्त सन्त दोनों एक दूसरे को जानते हैं। इससे पहले नर्क, चौरासी, स्वर्ग, बैकुंठ का ज्ञान तो लोगों को था। यह भी मालूम था कि पाप करने से नर्क जाना पड़ता है और पुण्य करने से स्वर्ग और बैकुंठ; लेकिन उससे बचने का उपाय नहीं मालूम था। परंतु जब प्रगट सन्त धरती पर आए, तब उन्होंने अच्छा-बुरा का ज्ञान तो कराया ही स्वर्ग, बैकुंठ, नर्क और चौरासी से बचने व जन्म-मरण की पीड़ा से छुटकारा पाने के लिए नामदान देकर के भजन कराया, अंतर में अपना परिचय दिया और जीवों को वापस सतलोक पहुंचाया।

इसी पद्धति को सबसे आला मत यानी सन्तमत कहा गया है। कलयुग में जीवों पर सन्तों ने दया की और उसके लिए कहा गया कि - सन्तों की महिमा अनंत, अनंत किया उपकार। आध्यात्मिक दृष्टिकोण से सच पूछा जाए तो जितने भी जीव हैं सब सन्तों के बच्चे की तरह से हैं चूँकि जीव उबारने के लिए ही सन्त आते हैं इसलिए फिक्र इनको ही रहती है और जो भी कार्य करते हैं या कोई माध्यम बनाते हैं तो जीवों की भलाई के लिए ही।

सन्त वंशावली

सन्त वंशावली में प्रथम सन्त कबीरदास जी ने नामदान देने का अधिकार नानकदेव जी को दिया, नानकदेव जी ने अंगददेव जी को दिया। इस तरह से नामदान देने का अधिकार दसों गुरु एक दूसरे को देते गए। दसवें गुरु थे— गुरु गोविंद सिंह जी जिन्होंने नामदान देने का अधिकार रतनराव पेशवा जी को दिया, रतन राव पेशवा जी ने श्याम राव पेशवा जी (तुलसीदास जी हाथरस वाले) को दिया। श्यामराव पेशवा जी ने शिवदयाल जी को दिया जिन्होंने राधास्वामी मत की स्थापना की थी। फिर शिवदयाल जी ने गरीब दास जी को नामदान देने का अधिकार दिया। गरीबदास जी ने विष्णु दयाल जी को, फिर विष्णु दयाल जी ने घूरेलाल जी (दादा गुरु जी) को, दादा गुरु जी ने परम पूज्य तुलसीदास जी को (बाबा जयगुरुदेव जी महाराज) तथा बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने बाबा उमाकान्त जी महाराज को नामदान देने, जीवों की सम्हाल व अधूरे काम पूरा करने के लिए धरती पर सतयुग लाने हेतु खुले मंच से आदेश दे दिया।



परम पूज्य बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के वचन

- ❖ ये पाँच नाम कभी नहीं बदलेंगे— तो ये बातें ध्यान रखो, उस मालिक का नाम— पाँच नाम न कभी बदलता है न कभी बदलेगा। ये पहले भी था और अब भी है। आप उसके लिए कोई भी नाम बना लो। पर ये परमात्मा के नाम न कभी बदले न बदलेंगे।

(अमर संदेश, वर्ष-12, अंक-6, अक्टूबर 1989, पेज न.-128)

- ❖ पांच नाम के सुमिरन का महत्व : केवल सुमिरन के द्वारा ही जीवात्मा शरीर को छोड़कर ऊपर की ओर जाती है। सुमिरन में उन धनियों को याद किया जाता है जो ऊपर के दैविक मंडलों में जगह-जगह बैठे हुए हैं और अपने-अपने मंडलों में राज कर रहे हैं। मन को रोककर सुमिरन करने से अनुभव जल्द होने लगता है। ऊपर बैठे मंडलों के धनी प्रसन्न होकर आगे का रास्ता जीवात्मा को दे देते हैं।

(शाकाहारी पत्रिका 21 से 27 अप्रैल 2011, वर्ष-40, अंक-38, मुख पृष्ठ)

- ❖ सभी समय में सन्तों का उपदेश एक ही होता है। सुरत शब्द योग का और पांच नाम का सभी ने वर्णन किया है।

(शाकाहारी पत्रिका 07 से 13 मार्च 2011, वर्ष-40, अंक-33, मुख पृष्ठ)

- ❖ जिन स्थानों पर महात्मा पहले रहा करते थे, ठीक ही रहे। लेकिन बाद में वो चले जाते हैं तो वह स्थान खाली हो जाते हैं। फिर वहाँ वापस नहीं आते हैं और आप उन्हीं स्थानों पर भटकते हो, यह नहीं समझते हो कि जो देने वाले थे वो तो चले गए; अब आपको खोज करनी पड़ेगी कि कोई जानकार, भेद बताने वाला मिल जाए। वो किसी जमीन-जायदाद के बंधुआ नहीं होते हैं। वो किसी बंधन में नहीं होते हैं। वो केवल ये चाहते हैं कि आप यहाँ से निकल चलो। क्योंकि यह मौका फिर मिलेगा नहीं। इसलिए शब्द की कमाई कर लो तो आपको सब रत्न जवाहरात मिल जायेंगे।

(शाकाहारी पत्रिका, 'स्वामीजी ने कहा' कॉलम से)

- ❖ यह गुरु महाराज (दादा गुरु पूज्य घूरेलाल जी) का चिन्ह बन रहा है। अभी तो आपको कुछ मिल जाएगा। बाद में समय निकल गया तो कुछ मिलने वाला नहीं। अभी तो वचन लगे हुए हैं। पीछे कुछ नहीं होगा।

(शाकाहारी पत्रिका)

- ❖ महात्मा जमीन जायदाद के बंधे नहीं होते और जब झगड़ा होने लगता है तो महापुरुष कहीं और जाकर बैठ जाते हैं।

(शाकाहारी सदाचारी बाल संघ, वर्ष 36, अंक 11, 21-27 अगस्त 2006)

- ❖ कूदा-फांदी करेंगे, गाड़ी को छू लेंगे, ऐसे दया नहीं मिलती। हर बात का तरीका होता है आप हाथ जोड़कर खड़े हो जाओ, मैं सबको देख लूंगा। तुमसे कहा जाता है कि भजन पर बैठो तो तुम भजन छोड़ कर भाग जाओ इससे तुम्हें क्या मिलेगा?

(शाकाहारी पत्रिका 14 जनवरी से 20 जनवरी 2005)

- ❖ समाधि पूजने से कुछ नहीं मिलेगा— जो लोग मूर्ति पूजा करते हुए सतसंग में आए हैं उनका स्वभाव अभी मौजूद है। तो फिर सतसंगी बनकर समाधि और पिछले सन्तों की यादगार को पूजने लगते हैं और समझने लगते हैं कि बस समाधि की पूजा करना ही सतसंग और परमार्थ है? उनको सतसंग का फल जो कि भक्ति का है; कैसे मिल सकता है? वहां तो मंदिर में मूर्ति पूजते थे और यहां समाधि पूजते हैं। दोनों में कुछ ज्यादा फर्क नहीं है। ऐसे लोगों के उदाहरण हैं जो समाधि पकड़ कर बैठ गए और छोड़ते ही नहीं। सन्तमत में तो शामिल हुए, पर अपने लिए परमार्थ की क्या सूरत पैदा कर ली! इसका कारण यह है कि उन्हें सच्चा शौक परमार्थ का नहीं था। यदि यह सोच लिया कि समाधि के द्वारा उद्धार हो जाएगा तो यह बिल्कुल गलत है।

(शाकाहारी पत्रिका 28 मई 2005 से 6 जून 2005)

- ❖ गुरु पूरा होना चाहिए, जिसकी रसाई सतलोक तक हो। ऐसा गुरु ईश्वर, ब्रम्ह, पारब्रम्ह, और उसके ऊपर भी बराबर आता-जाता रहता है। उसके भेद को कोई नहीं जान सकता। अधूरा गुरु अपने शिष्यों को सबसे ऊंचे पद पर नहीं ले जा सकता। जब तक पूरा गुरु न मिल जाए; कई गुरु किए जा सकते हैं उसमें कोई दोष नहीं।

परमात्मा की दया-मेहर का द्वार सन्त सतगुरु के मिलाप के बाद ही खुलता है। ऐसे गुरु की तलाश करनी चाहिए जो आदि से अन्त तक और अन्त से आदि तक का भेद जानता हो और आपको आखिरी मंजिल तक पहुँचा सके। सन्तों की आखिरी मंजिल सतलोक अनामी धाम है। इसी स्थान से सारी की सारी सुरतें (जीवात्माएं) नीचे उतारी गईं। ईश्वर, ब्रम्ह, पारब्रम्ह भी इसी स्थान से आये। आपने सतसंग सुना और निर्णय आपका करना है कि किस गुरु से आपका आत्म कल्याण होगा। कबीर साहब ने कहा है—

साधो सो सतगुरु मोही भावे।

परदा दूर करे आखिन का, निज दर्शन दिखलावे।।

(शाकाहारी पत्रिका वर्ष-41, अंक-3, 14 जून 2011 से 20 जून 2011)

- ❖ गुरु बनना हंसी खेल नहीं— एक महात्मा जी अपने शिष्यों के साथ कहीं जा रहे थे। रास्ते में एक सांप घायल अवस्था में पड़ा हुआ था और उस पर तमाम चीटियां लग रही थी। सांप हिल सकता नहीं था, बेचैन होकर अपना फन उठाता था फिर गिर जाता था। महात्मा जी उसे देख कर रो पड़े। शिष्यों को समझ में नहीं आया। उन्होंने कहा, महाराज जी आप क्यों रो रहे हैं? महात्मा जी बोले कि कर्मों का ऐसा विधान है जिसे जीव अपनी अज्ञानता में नहीं समझ पाता है। यह सांप कभी गुरु बना था। महात्माओं की नकल की थी और इतने शिष्य बनाए। शिष्यों से इसने हर तरह की तन-मन-धन की सेवा ली लेकिन उनकी आत्माओं का कल्याण न कर सका क्योंकि इसने अपनी आत्मा का भी कल्याण नहीं किया था। अब कर्मों के जाल में फँसकर वह गुरु सांप बना और उसके सारे शिष्य चीटियां बन गए हैं। अब यह चीटियां इस घायल सांप को काट रही हैं और कह रही हैं कि मेरी सेवाओं का बदला दो। तुमने मुझे क्यों धोखे में रखा, मेरा आत्म कल्याण नहीं किया और यह बेचारा सांप ऐसी अधोगति में पड़ा हुआ पीड़ा सह रहा है लेकिन कुछ कर नहीं पा रहा है।

स्वामी जी महाराज ने इस कहानी को सुनाते हुए कहा कि गुरु बनना कोई हंसी खेल नहीं है, सबसे खराब काम है। चेले बनाकर उनकी सेवाओं को लेकर अगर आत्म कल्याण उनका न किया गया तो वह आत्माएं अपना बदला मांगती हैं। गृहस्थों के खून-पसीने की कमाई की रोटी खाकर जो साधु उनका कल्याण नहीं करता तो यह रोटियां उसके आँतों को फाड़ देती हैं।

(शाकाहारी पत्रिका, वर्ष-9, अंक-27, 21 जनवरी 1980, पृष्ठ संख्या-4)

- ❖ अवतारी शक्तियों का जन्म हो गया है —16 अगस्त कानपुर — 60 हजार नर-नारियों के बीच बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने बताया कि भारतवर्ष में अवतारी शक्तियों ने जन्म ले लिया है। अनेक स्थानों पर वे बच्चों के रूप में पल रहे हैं और समय आने पर प्रगट हो जाएंगे। गुरु महाराज ने आगे बताया कि माता-पिता सुधार कर लें वरना यही बच्चे उनके विनाश का कारण बन जायेंगे। इन बच्चों को गोشت व अंडा दिया जाता है तो मुंह फेर लेते हैं और उधर देखते तक नहीं। तो माँ-बाप इस बात का ध्यान दें कि जो बच्चे इन सब चीजों को खाना नहीं चाहते उन्हें जबरदस्ती न खिलायें।

पुनः स्वामी जी ने इस बात का संकेत दिया कि वह अवतार जिसकी लोग प्रतीक्षा कर रहे हैं, 20 वर्ष का हो चुका है। यदि उसका पता बता दूँ तो लोग पीछे पड़ जायेंगे। अभी ऊपर से आदेश बताने के लिए नहीं हो रहा है। मैं समय का इन्तजार कर रहा हूँ और सभी महात्माओं ने समय का

इन्तजार किया है। समय आते ही आपको सब कुछ मालूम हो जायेगा।
(शाकाहारी पत्रिका 28 अगस्त 1971)

- ❖ महापुरुष का जन्म हो चुका है स्वामी जी ने इस बात का संकेत दिया कि महापुरुष का जन्म भारतवर्ष में उत्तर प्रदेश के एक छोटे से गाँव में हो चुका है। वह व्यक्ति मानव इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति बनेगा। उसे जनता का इतना बड़ा समर्थन प्राप्त होगा कि आज तक किसी को नहीं मिला है।

(शाकाहारी सदाचारी बाल संघ 7 सितम्बर 1971 वर्ष -1 अंक 15)

- ❖ एक जिज्ञासु प्रेमी ने पूछा— स्वामी जी आपका शरीर यानी सतगुरु का रूप जो आपका है, इसके अलावा आपका कोई और रूप भी है ?

स्वामी जी ने कहा—“सतगुरु हमेशा रहते हैं, हम आदमी हैं इसलिए हम को समझाने बुझाने के लिए आदमी ही चाहिए। आदमी का उस्ताद आदमी है। लेकिन कोई इसका मतलब यह न समझ लेना कि सतगुरु आदमी होता है। ऐसा नहीं बल्कि वह मालिक अपनी ताकत किसी न किसी आदमी के चोले में रख देता है। मगर जब तक कोई महात्मा शरीर में बैठा है वह अपने आप को सतगुरु नहीं कहता। वह कहता है कि मैं सेवक हूँ, दास हूँ। वह मालिक हमारे जैसा आदमी बन कर समझाएँ तभी हम समझ सकते हैं। नहीं तो, नहीं।

लेकिन परमात्मा स्वयं नहीं आता। क्यों ? जब करोड़ों सूर्य, करोड़ों चंद्रमा उसके एक रोम का मुकाबला नहीं कर सकते, यदि खुद वह इस दुनिया में आ जाए तो हम उसको किस तरह देख सकते हैं ! इसलिए जब वह मालिक हम को समझाना चाहता है तो मनुष्य बनकर आता है। हमें वह मनुष्य बनकर मिलता है। उसका देहरूप तो जीवों को नाम दान देने के लिए है। उसका असली रूप तो शब्द रूप है प्रकाश रूप है”।

- ❖ सतयुग तो आएगा ही हम रहे, न रहें।

(शाकाहारी पत्रिका 28 मई 2004 से 6 जून)

- ❖ महात्माओं की वाणी कभी असत्य नहीं होती इस कलयुग में कलयुग जाएगा और कलयुग में सतयुग आएगा दोनों की जब टक्कर होगी तो महाभारत होगा और विनाश होगा। जो अच्छे लोग होंगे, विचारधारा और कर्म अच्छे होंगे वही बच पाएंगे।

(शाकाहारी पत्रिका 14 अक्टूबर से 20 अक्टूबर 2005)

- ❖ जब तक शरीर रहेगा, यह भी तो किराए का मकान है! यह भी तो खाली होना है! इसमें कोई रहेगा थोड़ी? खाली होगा। जब तक है तब तक है, फिर खाली होगा। यह मिट्टी का मिट्टी में मिल जाएगा। जब हम अपने को कहते हैं कि मिट्टी में मिल जाएगा तो आपको कह देंगे कि आप यहां रहेंगे? शरीर तो सबका मिट्टी में मिलेगा।

(अमर संदेश, वर्ष 54, अंक 12, पृष्ठ 378, अप्रैल 2012)

- ❖ स्वामी जी महाराज ने सतसंग सुनाते हुए दादागुरु के बारे में कहा—“हमारे गुरु महाराज ने भी कहा था कि हम बूढ़े हो गए हैं। अब हमारे पास समय नहीं है। हम तुम्हें यह चीज देते हैं, बांट देना”(यानी दादा गुरु जी महाराज ने स्वामी जी महाराज से कहा था कि हम बूढ़े हो गए हैं, हमारा समय पूरा हो रहा है, हम तुमको नामदान की यह अमोलक दौलत देते हैं, इसको तुम बांट देना) फिर स्वामी जी महाराज ने कहा कि—“मैं उनकी (अपने गुरु की) अमानत को बांटता रहा। बांटते-बांटते कब समय पूरा हो गया पता नहीं चला। यहां जो आया है, उसे जाना है। अमर की लेखनी किसी को नहीं है। किसी का पट्टा नहीं लिखा हुआ है। हमें भी जाना है। समय रहते भजन कर लो, पता नहीं वह कब इस शरीर को बदल देगा, किस में बंद करेगा। उसका काम देना और बदलना ही है।

(सतसंग वचन, 12 नवंबर 2004, मथुरा आश्रम)

- ❖ मैं बूढ़ा हो गया हूँ, शरीर पुराना हो गया है, कभी भी जा सकता हूँ।

(शाकाहारी सदाचारी बाल संघ, 7-13 फरवरी 2008)

- ❖ 16 दिसंबर 2010 को मथुरा आश्रम पर भंडारे के कार्यक्रम में सतसंग सुनाते हुए बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने कहा— “हमारा शरीर अब बुझा हो गया, साथ नहीं देता है, थक जाता हूँ, ऑक्सीजन की जरूरत पड़ती है, इससे सांसें की बचत करता हूँ और लोगों को सतसंग सुनने को मिल जाता है। यहां की सब चीजें नाशवान हैं। हमारा शरीर भी नाशवान है। यह पिंजड़े की तरह से है, इसमें से सुरत निकल जाएगी तब शरीर खाली पड़ा रहेगा और इसका जो आप करते हो वह करोगे। इसको कोई रख नहीं पायेगा।” (शाकाहारी पत्रिका 7 से 13 जनवरी 2011 वर्ष 40 अंक 26 पृष्ठ 4)

- ❖ मंदिर तो चिह्न है जिसे देखने के बहाने आपको यह अमोलक चीज मिल रही है। अगर यह बहाना न हो देखने का तो आप यह अमोलक चीज नहीं पा सकते। खाली ईंट और पत्थरों को देखकर के नहीं मिलता है, वो तो मिलेगा उस महात्मा से जिसने कमाई करके उसको पाया है। तो तुम इसी में फंसे हो, तो इसको देखकर के यहाँ आ जाओगे।

(प्रातः काल सतसंग, मथुरा-16.12.2002)

- ❖ जिस गुरु के समीप पहुँचते ही हृदय की सन्ताप बुझ जावे और उसे शीतलता व शांति मिले तो समझना होगा कि यह महापुरुष हैं और साथ-साथ 5 नाम और 5 रूपों का भेद देते हैं उन्हीं को गुरु कहते हैं।

(शाकाहारी पत्रिका, 7 से 13 अक्टूबर 2007 वर्ष 37, अंक 16)

- ❖ गुरु कभी मरता नहीं है। जीवन में शिष्यों से भजन कराता है और जब वे ऊपरी मंडलों में जाते हैं तो वहां भी कदम कदम पर सम्हाल करता रहता है। लेकिन गुरु सदा सूक्ष्म रूप से अन्तर में शिष्यों की सहायता करता है।

(शाकाहारी पत्रिका, 7 से 13 अक्टूबर 2007 वर्ष 37, अंक 16)

मृत्युलोक का यही विधान है कि इस पंचभौतिक शरीर का समय पूरा होने पर सभी को चोला (शरीर) छोड़ना ही पड़ता है, अतः निजधाम जाने से 5 वर्ष पहले ही बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने दिनांक 16 मई 2007 दिन बुधवार को बसीरतगंज, जिला उन्नाव के आश्रम पर सतसंग के दौरान, चालीसों साल शरण में रहे बाबा उमाकान्त जी महाराज को वहाँ मौजूद संगत के सामने मंच पर खड़ा करके जानशीन के रूप में घोषणा करते हुए कहा—“यह उमाकान्त तिवारी हैं, यह पुरानों की सम्हाल करेंगे और नए को नामदान देंगे”। पूरे सन्त सतगुरु का वचन ही दस्तावेज होता है इसलिए गुरु महाराज के कहे हुए, रिकॉर्ड किये हुए इस वचन को आज भी सच्चे गुरु भक्त मानते हैं। वक्त के सच्चे गुरु की पहचान बाहरी हाड़-माँस के शरीर व वेशभूषा से नहीं होती है बल्कि गुरु द्वारा बताए अन्तर्मुखी साधना से होती है। जिस तरह सिख गुरु हरकिशन जी के चोला छोड़ने के बाद जैसे मक्खन शाह ने बाबा बकाला में गुरु तेग बहादुर में सच्चे गुरु की पहचान की थी वैसे ही सच्ची पहचान आज भी की जा सकती है। इसी तरह गुरु नानकदेव जी से भी एक बार संगत ने प्रश्न किया था कि हम वक्त के गुरु को कैसे पहचानेंगे? तब नानकजी ने उत्तर दिया था कि —

“तन तजै छंटनी करै,
सौ दिन व्रत कराय।
बिरख जूट बिसराय कै,
गुरु का रूप बनाय।
गुरु का रूप बनाय,
पाँच नाम का दे उपदेश हरषाय।
कहै नानक इतना करै,
सोई सतगुरु कहाय।”

अर्थात् गुरु के शरीर छोड़ने के बाद स्वार्थी लोगों का साथ छोड़कर, सौ दिन व्रत रखता है, टाट उतारकर गुरु का रूप धारण करता है और खुश होकर पाँचनाम का नामदान देता है वही सच्चा सतगुरु कहलाता है।

नानकजी की ही वाणी में आया है—

“सन्त की निंदा नानका,

फिरि—फिरि नरकै जाय।”

परम् पूज्य बाबा जयगुरुदेव जी महाराज की अविस्मरणीय यादें



- ❖ बाबा जयगुरुदेव जी महाराज 18 जनवरी 2009 की रात्रि में उज्जैन में रुके थे और 19 जनवरी 2009 की प्रातःकाल 4 बजे की अमृत बेला में मक्सी रोड, श्री चौराहे के पास एक जगह पर स्वामी जी महाराज गए और टहलते हुए स्वामीजी महाराज ने बाबा उमाकान्त जी महाराज से कहा—

“यह जगह बहुत अच्छी है.... यह जगह बहुत अच्छी है.... यह जगह बहुत अच्छी है....समझे” स्वामीजी महाराज ने ये बात 3 बार दोहराई कि “ये जगह बहुत अच्छी है” आज उसी स्थान पर बाबा जयगुरुदेव आश्रम, उज्जैन बना हुआ है।

- ❖ बाबा जयगुरुदेव जी महाराज से एक प्रेमी ने पूछा— स्वामी जी सतगुरु के अपने जानशीन में आ समाने से क्या मुराद (मतलब) है क्योंकि एक शरीर में दो सूरतें नहीं समा सकती हैं और सतगुरु का अपने सेवक के शरीर में समाकर और संसार के भोग भोगना अनीत मालूम होता है ?

स्वामी जी ने कहा— सतगुरु अपने जानशीन में आ समाते हैं। इससे यह मतलब है कि उस जानशीन पर सतलोक और दसवें द्वार सुन्न से भृंग दृष्टि डालकर उसको अपने समान कर लेते हैं। इस मेहर आलूद (भरी)दृष्टि डालने को आ समाना कहा है क्योंकि सतगुरु की सुरत की धार सेवक की सुरत से मिलती है और सुन्न के नूर और तजल्ली (प्रकाश) पर निगाह ठहराने की ताकत हो जाती है और मानसरोवर स्नान करके वह सुरत शब्द रूप हो जाती है यानी शब्द रूप धारण कर लेती है और वही निज रूप सतगुरु का है।

—पुस्तक सन्त सत्य वचन पेज नं 17

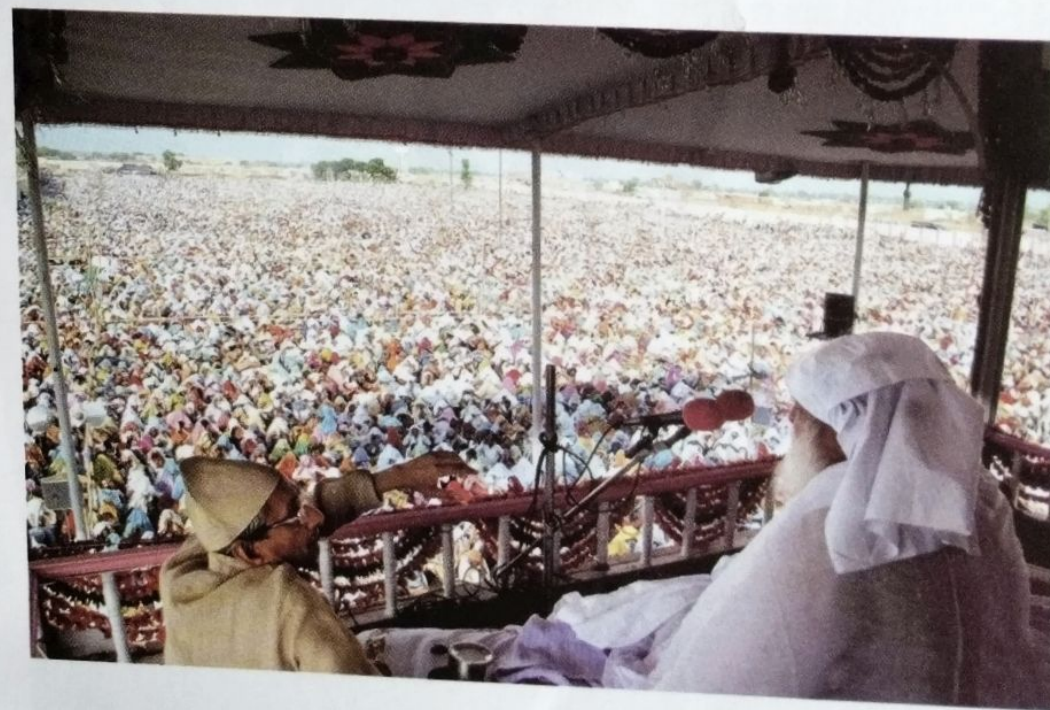
- ❖ बात 1973 की है। हरिद्वार के चमगादड़ टापू पर परम पूज्य बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने एक विशाल कार्यक्रम करवाया था, जिसका नाम था “महामानव यज्ञ”। “महामानव यज्ञ” बोलकर गुरु महाराज ने प्रचार करवाया था। उस समय लोगों के मन में यह प्रश्न उठा था कि “महामानव” कौन है? गुरु महाराज तक जब यह बात पहुंची तो उन्होंने कार्यक्रम के दौरान कहा था—“वह महामानव इस समय इसी मैदान में मौजूद है और आगे समय आने पर तुमको परिचय मिल जाएगा।” गुरु महाराज की इस बात को लोग समझ नहीं पाए बल्कि उनके नजदीक रहने वाले कुछ लोग स्वयं को ही महामानव समझने लगे; जबकि यह सर्वथा भ्रम तब साबित हुआ जब 16 मई, दिन बुधवार, 2007 को बसीरत गंज आश्रम पर मंच से परम पूज्य बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने पूज्य बाबा उमाकान्त जी महाराज को खड़ा करके अपना आध्यात्मिक उत्तराधिकारी घोषित कर दिया और कहा कि—“यह हैं उमाकान्त तिवारी। यह नयों को नामदान देंगे और पुरानों की सम्हाल करेंगे” तब लोगों के समझ में आया।

ज्यों केले के पात के, पात पात में पात।

त्यों सन्तन की बात के, बात बात में बात।

इशारा तो गुरु महाराज ने 1973 में ही कर दिया था क्योंकि गुरु महाराज जानते थे कि जिसको हमें यह आध्यात्मिक दौलत देनी है वह हमारा शिष्य हरिद्वार के चमगादड़ टापू पर हमसे सर्वप्रथम मिलेगा, नामदान लेगा। गुरु महाराज ने जो वचन कहे थे कि—“वह महामानव इसी मैदान में मौजूद है और आगे समय आने पर तुमको परिचय मिल जाएगा” तो आज उस महामानव का परिचय हम सभी के सामने स्पष्ट है कि जो जीवों को नामदान की दौलत खुले मंच से लुटा रहे हैं।

- ❖ जरा सोचिए! आज हम और आप कितने सौभाग्यशाली हैं कि ऐसे महामानव का दर्शन—दीदार कर पा रहे हैं जिनको ऐसे महापुरुष ने यानी परम सन्त बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने जीवों को नामदान देने का अधिकार दिया था। सन्त सतगुरु अपने आदेश से जो भी काम करवाते हैं उसमें उनका संकल्प जुड़ा रहता है। ऐसा ही एक संकल्प 26 नवंबर 1973 को बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने चमगादड़ टापू के “महामानव यज्ञ” में लिया था। वह संकल्प था—“जब तक देश में गाय की हत्या बंद नहीं हो जाती तब तक कोई भी हर की पौड़ी पर स्नान नहीं करेगा।



(पूर्व का एक स्मरणीय चित्र)

बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के सतसंग के समय बैठे हुये बाबा उमाकान्त जी महाराज

- ❖ एक प्रेमी की जुबानी— बात सन् 2006 की है। सागर (मध्य प्रदेश) में स्वामी जी महाराज का कार्यक्रम था। मैं रात के 2:30 बजे स्वामी जी के पास दर्शन के लिए पहुँचा। स्वामी जी ने पास बुलाया और कहा— पैर दबाओ, मैं पैर दबाने लगा। कुछ देर तक स्वामी जी से बातें हुई। फिर पूछा— ये कौन लेटा है? मैंने कहा—हुजूर, तिवारी जी (पूज्य बाबा उमाकान्त तिवारी जी महाराज)। फिर गंभीर होकर बोले — देखो, ध्यान से सुनो! आगे का सतसंग मैं इनसे ही कराऊँगा। तुम हमेशा इनके साथ रहना। ये बात अभी किसी से कहना नहीं, मैं मंच से कहूँगा।

— श्री शांति कुमार श्रीवास्तव उर्फ मुन्ना (सेवा निवृत्त एयर कमांडर) पुत्र परलोक वासिनी तारा देवी श्रीवास्तव (1957 में अपने पिता के देहान्त के बाद से अपनी माँ और भाई-बहनों के साथ कृष्णानगर आश्रम, मथुरा में रहे। (परम् पूज्य बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के अत्यन्त विश्वास पात्र रहे)।

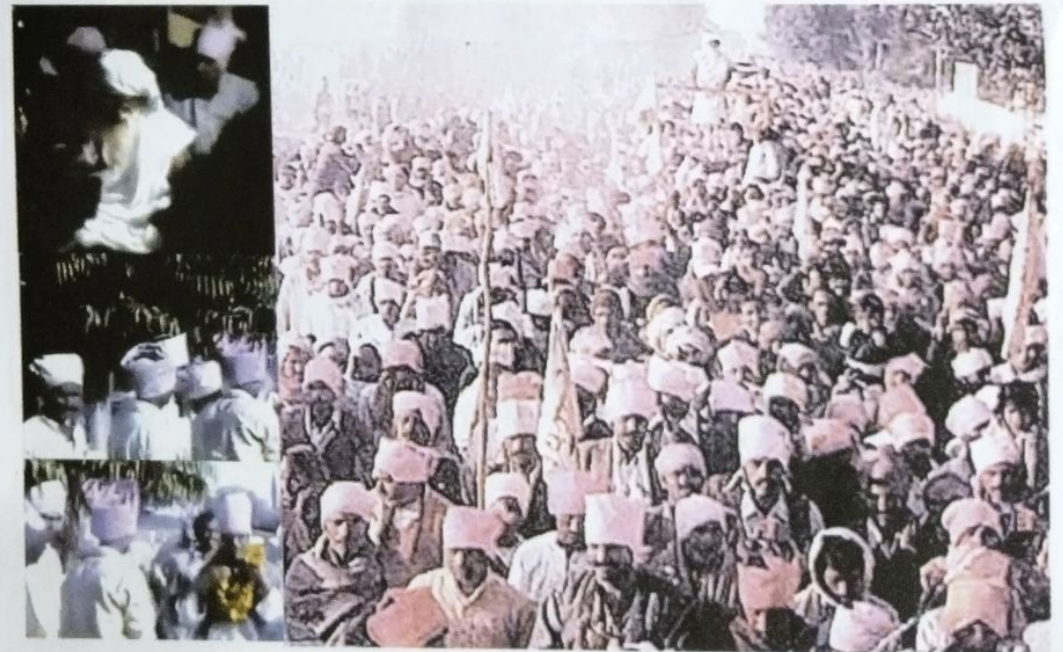


वर्तमान में वक्त गुरु बाबा उमाकान्त जी की बाइक पर जाते हुये परम् सन्त बाबा जयगुरुदेव जी महाराज

गुलाबी वस्त्र एवं जयगुरुदेव ध्वजा की महिमा

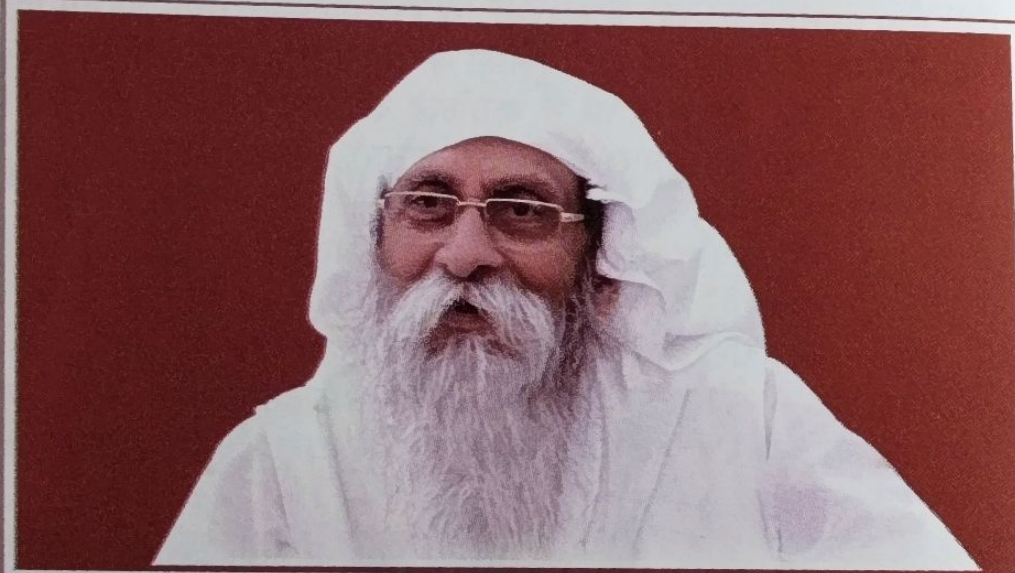
बाबा जयगुरुदेव जी महाराज ने 1979 में गुलाबी पगड़ी बँधवाई थी तथा कहा था कि "गुलाबी वालों की नजर जहाँ तक जाएगी, कोई नुकसान नहीं होगा" फिर गुरु महाराज ने 1983 में जब 1 करोड़ लोगों को टाट पहनने का आदेश दिया तब कहा था कि "इस गुलाबी पगड़ी को पेट में, बक्से में सोने-चांदी की तरह सम्हाल कर रखना। आगे वक्त आने पर इसकी आवश्यकता पड़ेगी।"

31 जनवरी 2014 को शिमोगा, कर्नाटक में गुरु महाराज के वचन को याद दिलाते हुए बाबा उमाकान्त जी महाराज ने कहा कि जो गुलाबी पगड़ी गुरु महाराज ने 1983 में उतरवा कर रखवाई थी उसको पहनने का समय आ गया है। कोई भी एक गुलाबी कपड़ा धारण कर लीजिए और कहा था— गुलाबी का राज तो मैं काफिले के समापन पर बताऊँगा। काफिले के समापन पर भोपाल में सतसंग सुनाते हुए बाबा उमाकान्त जी महाराज ने कहा— "जो लोग सुमिरन, ध्यान, भजन करेंगे, शाकाहारी—नशा मुक्त रहेंगे, गुलाबी कपड़ा धारण करेंगे, उनकी अकाल मृत्यु नहीं होगी। उसी की नहीं साथ वाले की भी बचत हो जाएगी और यह भी कहा था कि आप अपने-अपने घरों पर 'जयगुरुदेव' नाम का झण्डा लगा लो। 'जयगुरुदेव' घर के ऊपर लिख लो। अगर त्रेता में लंका में आग लगने पर विभीषण की कुटिया बच सकती है तो आने वाले खराब समय में आपका घर भी बच जाएगा।



बाबा उमाकान्त जी महाराज का संक्षिप्त परिचय

बाबा उमाकान्त जी महाराज बाल्यावस्था से ही आध्यात्मिक रुचि के कारण पढ़ाई पूर्ण होते ही सन् 1973 में खिंचकर बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के पास पहुंचे, नामदान लिया और गुरु आदेशानुसार सेवा, भजन कार्य में लग गए। शुरु में थोड़े समय के लिए गुरु के पास रहते तथा बीच-बीच में गाँव जाकर माता-पिता की सेवा करते रहे और सन् 1976 से बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के निजधाम जाने तक, बाबा उमाकान्त जी महाराज साये की तरह उनके साथ लगे रहे और गुरु महाराज के जाने के बाद उनके मिशन को पूरा करने में लग गए।



परम संत बाबा उमाकान्त जी महाराज

इस समय पर परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज गुरु के एक-एक वचन का अक्षरशः पालन करते हुए बाबाजी के मिशन को पूरा करने में लगे हुए हैं। लोगों को शाकाहारी, सदाचारी, नशामुक्त तथा देशभक्त बनने का उपदेश करते हुए बिना किसी भेदभाव के सबको जीते जी प्रभु प्राप्ति का रास्ता (नामदान) देकर, पापों, गलतियों की माफी कराकर, परेशानियों व बीमारियों में राहत देकर, दैनिक जीवन में सुख-शान्ति का अनुभव करा रहे हैं। परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज अभी तक लाखों लोगों को नामदान दे चुके हैं। जिसकी साधना करने से लौकिक और पारलौकिक दोनों प्रकार के लाभ का अनुभव लोगों को हो रहा है।

बाबा उमाकान्त जी महाराज द्वारा देश-विदेश में संचालित जन कल्याणकारी एवं जीव कल्याणकारी अभियान

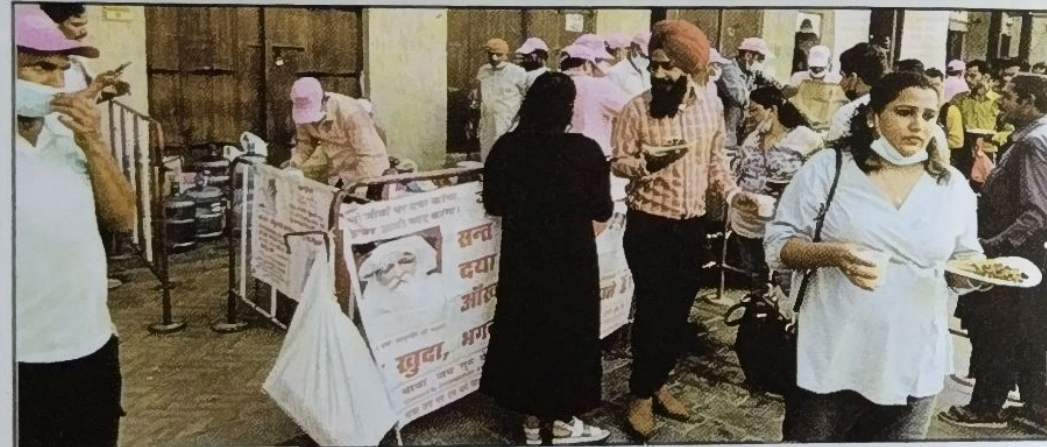
परम पूज्य बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के वचनों और विचारधारा को पूरे विश्व में फैलाने के लिए उनके आध्यात्मिक उत्तराधिकारी बाबा उमाकान्त जी महाराज ने 15 देशों का दौरा किया, वहां पर सतसंग व नामदान लोगों को दिया व 40 से अधिक देशों में गुरु महाराज का नाम पहुंचाया तथा विश्व के बड़े देश जैसे कि 'यू.एस.ए.', यू.के., ऑस्ट्रेलिया, यू.ए.ई., हांगकांग, सिंगापुर, मलेशिया, मॉरिशस व अन्य देशों में बाबाजी महाराज ने समय-समय पर लोगों को प्रभु प्राप्ति का रास्ता बताया। बाबा जी महाराज की प्रेरणा से 'वसुधैव कुटुम्बकम्' की भावना को साकार करते हुए, लोगों को आध्यात्मिक व भौतिक लाभ दिलाने के लिए उनके अनुयायी देश-विदेश में तरह-तरह के जनहित के कार्य भी कर रहे हैं।



अमेरिका में जरूरतमंद लोगों को निःशुल्क भोजन वितरण करते हुए प्रेमी



जरूरतमंद लोगों को भोजन वितरण करते हुए बाबा जयगुरुदेव संगत हांग कांग के प्रेमी



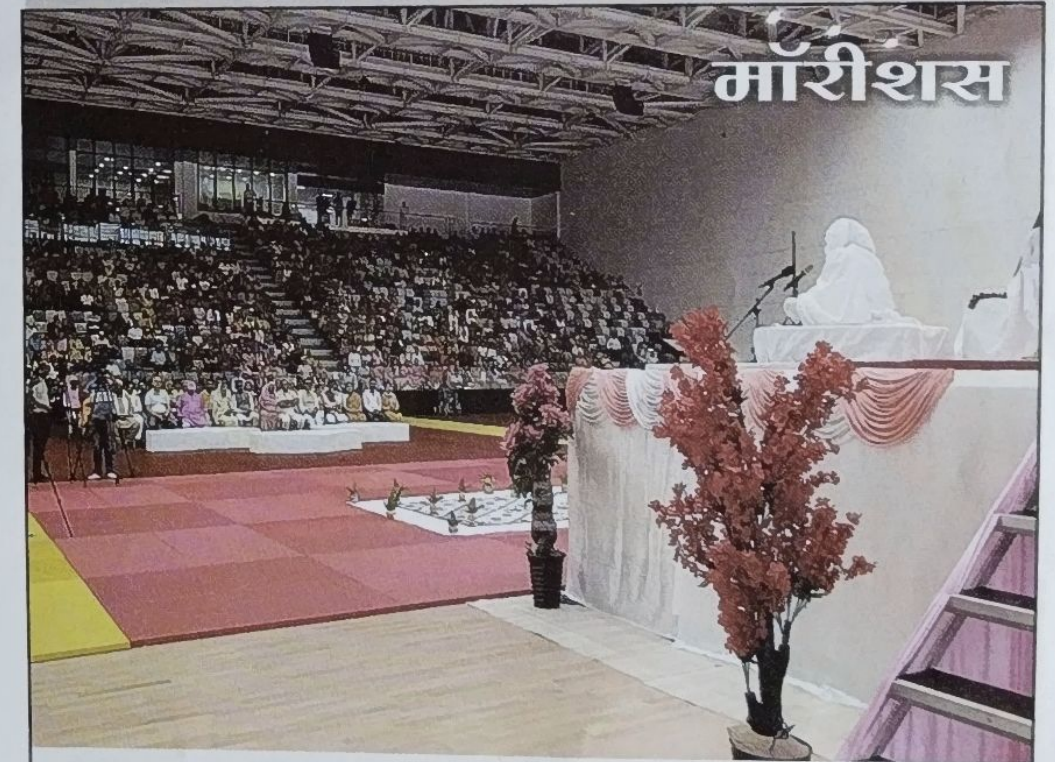
U.A.E. के दुबई में उदरपूर्ति अभियान के तहत भोजन बाँटते प्रेमी



सिंगापुर में बाबा जयगुरुदेव संगत, सिंगापुर के प्रेमियों द्वारा चलाया जा रहा उदरपूर्ति अभियान



हांगकांग में पूज्य संत बाबा उमाकांत जी महाराज का सतसंग एवं नामदान कार्यक्रम



मॉरीशस में पूज्य संत बाबा उमाकांत जी महाराज का सतसंग एवं नामदान कार्यक्रम

इसके अलावा सिंगापुर, मलेशिया, हांगकांग व मॉरीशस में प्रतिदिन ऑनलाइन जयगुरुदेव नाम ध्वनि होती है।

जन जागरण हेतु शाकाहारी एवं नशामुक्त सम्मेलन

शाकाहार-सदाचार का प्रचार, प्रेरणा देकर संकल्प कराना

परम सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज के सानिध्य में देश-विदेश में अनेक शाकाहारी सम्मलेन हुए। सर्वप्रथम उज्जैन में बाबा उमाकान्त जी महाराज आश्रम पर हुआ जिसमें एक दिन में, एक स्थान पर, एक साथ, एक लाख लोगों ने शाकाहारी रहने व अन्य लोगों को भी शाकाहारी बनने की प्रेरणा देने का संकल्प दिनांक 23 मई 2017 को संस्था द्वारा आयोजित वार्षिक भण्डारा के सतसंग कार्यक्रम में लेकर वर्ल्ड रिकॉर्ड बनाया।



एक साथ, 1 लाख लोग, शाकाहारी रहने व अन्य लोगों को शाकाहारी बनाने का संकल्प लेते हुए

शाकाहार के प्रचार-प्रसार के लिए परम पूज्य बाबा उमाकांत जी महाराज के मार्गदर्शन में 'अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी एवं नशामुक्त सम्मेलन' दिल्ली के रामलीला मैदान में 19 व 20 अक्टूबर 2019 को हुआ था। इसमें 32 देशों के लोगों ने हिस्सा लिया था साथ ही दो विश्व रिकॉर्ड भी बना था।

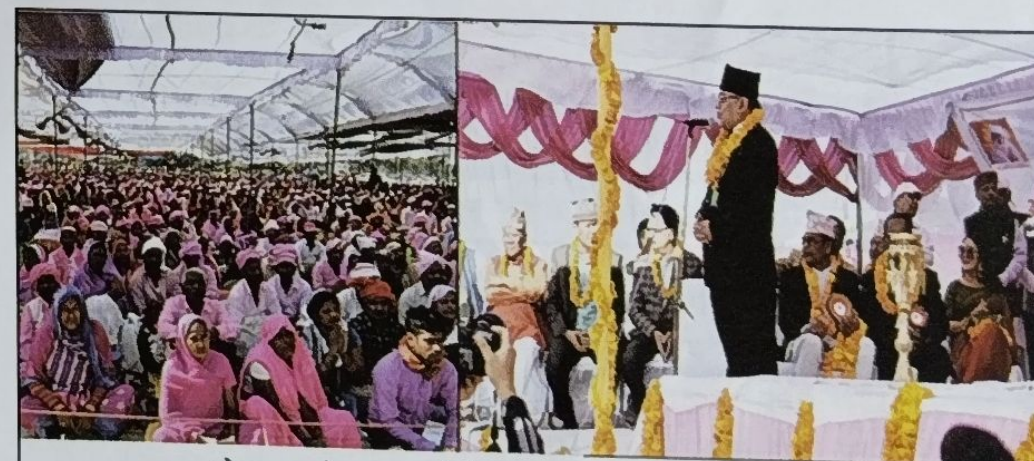


दिल्ली के रामलीला मैदान में सत्संग तथा अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी एवं नशामुक्त सम्मेलन



दिल्ली के रामलीला मैदान में अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी एवं नशामुक्त सम्मेलन में ऐतिहासिक भीड़

दिनांक 15 व 16 नवम्बर 2019 को नेपाल के काठमांडू में 'अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी एवं नशामुक्त सम्मेलन' हुआ। जिसमें नेपाल के वर्तमान प्रधानमंत्री श्री पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड', पूर्व प्रधानमंत्री, मंत्री व अन्य गणमान्य लोग भी सम्मिलित हुए थे साथ ही कई देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया और शाकाहार से संबंधित तीन विश्व रिकॉर्ड बने।



नेपाल के प्रधानमंत्री पुष्प कमल दाहाल 'प्रचंड' शाकाहारी सम्मलेन को संबोधित करते हुए

दिनांक 4 व 5 जनवरी 2020 को मुंबई में आयोजित 'अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी एवं नशामुक्त सम्मेलन' में कई देशों के लोगों ने भाग लिया था।



अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी सम्मेलन - मुंबई 4 व 5 जनवरी 2020 में उपस्थित कई देशों के लोग

इसी क्रम में एक 'अंतर्राष्ट्रीय शाकाहारी एवं नशामुक्त सम्मेलन' 1 मार्च 2020 को मॉरीशस में हुआ। जिसमें मॉरीशस के तत्कालीन राष्ट्रपति श्री परमासिवम पिल्लै 'बार्लेन' व्यापारी भी सम्मिलित हुए थे। परम पूज्य बाबा उमाकान्त जी महाराज के द्वारा सामाजिक उत्थान के लिए चलाए जा रहे विभिन्न कार्यक्रमों के बारे में राष्ट्रपति महोदय ने जानकारी ली व इससे प्रभावित हुए। उनको कुछ शारीरिक समस्या थी, जिसके लिए संस्था के एक्यूप्रेशर के जानकारों ने उनका इलाज किया जिससे उन्हें अतिशीघ्र स्वास्थ्य लाभ मिला। वह आज भी परम सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज के दर्शन के अभिलाषी रहते हैं।

इसके अलावा देश के अनेक राज्यों में प्रान्त, जिला, तहसील एवं ग्रामीण स्तर के अनेकों शाकाहारी एवं नशामुक्त सम्मलेन प्रेमियों द्वारा आयोजित किये गए तथा लाखों लोगों ने शाकाहारी एवं नशामुक्त बनने व रहने का संकल्प लिया।

1. सभी लोगों को मांस, मछली, अण्डा आदि अशुद्ध आहार छोड़कर, जीवों पर दया करते हुये शुद्ध शाकाहारी बनने की प्रेरणा दी जाती है जिसके फलस्वरूप अभी तक संस्था के अध्यक्ष परम सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज की प्रेरणा से लाखों लोग अशुद्ध आहार छोड़कर शाकाहारी बन गये हैं।
2. आँखों से माँ, बहन, बहू, बेटी की पहचान खत्म करने वाले बुद्धि नाशक नशों जैसे शराब, ताड़ी, अफीम, गांजा, भांग, चरस, ड्रग्स, कोकीन, हेरोइन आदि से दूर रहने की शिक्षा देकर अभी तक महाराज जी लाखों लोगों को नशामुक्त बना चुके हैं।
3. लोगों को चोरी, रिश्वतखोरी, व्यभिचार, पर निन्दा, हड़ताल, तोड़-फोड़, धरना, घेराव, आगजनी आदि से दूर रहते हुये मेहनत और ईमानदारी की ही कमाई करते हुये सभी परिस्थितियों में मालिक पर भरोसा रखने की प्रेरणा दे रहे हैं।
4. सभी बच्चों, विद्यार्थियों व युवाओं में चरित्रवान व देशभक्त बनने की भावना का विकास किया जाता है।
5. शाकाहार, सदाचार, जीव दया, परमार्थ का संदेश जन-जन तक पहुँचाने के लिए परम सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज के आदेश से प्रेमियों द्वारा 18 दिसम्बर से 28 दिसम्बर 2014 तक **कर्म मुक्ति प्रचार अभियान** एवं 3 दिसम्बर से 13 दिसम्बर 2016 तक **"नशा मुक्त शाकाहार सघन प्रचार अभियान"** सम्पूर्ण भारत में चलाया गया।
6. 7 जुलाई 2017 को गुरु पूर्णिमा के पावन पर्व पर अजमेर रोड, नेशनल हाइवे-8 के किनारे, भांकरोटा, जयपुर में संस्था द्वारा आयोजित शाकाहारी सम्मेलन में उपस्थित राजस्थान सरकार के मंत्रियों एवं विभिन्न सम्प्रदाय के धर्म गुरु आये, समाज के अध्यक्ष, बुद्धिजीवियों, डाक्टरों, वैज्ञानिकों, सामाजिक संगठनों, व्यापारियों, राजनेताओं आदि सभी लोगों ने शाकाहारी रहने तथा लोगों को भी शाकाहारी बनाने का संकल्प लिया।



लोकसभा सांसद जगदम्बिका पाल ने जयपुर (राज.) में बताये शाकाहार व नशामुक्ति के फायदे

7. 2 अगस्त 2017 को चकिया, पूर्वी चम्पारण, बिहार में संस्था द्वारा आयोजित शाकाहारी सम्मेलन में उपस्थित विभिन्न सम्प्रदायों के प्रमुख एवं आये हुये श्रद्धालुओं ने शाकाहारी रहने तथा लोगों को भी शाकाहारी बनाने का संकल्प लिया।
8. 4 अगस्त 2017 को हरमू खेल मैदान, राँची, झारखण्ड में संस्था द्वारा जीव कल्याण एवं शाकाहार के प्रति जन जागरण के लिए विशाल स्तर पर शाकाहारी सम्मेलन आयोजित किया गया।



राँची, झारखण्ड में शाकाहार के बारे में बताते हुए बुद्धिजीवी

9. 9 अगस्त 2017 को कृषि उपज मंडी, रायपुर, छत्तीसगढ़ में शाकाहारी सम्मेलन के आयोजन में उपस्थित राजनेताओं, विभिन्न सम्प्रदाय के धर्म गुरुओं की उपस्थिति में कार्यक्रम में सम्मिलित लोगों को शाकाहारी रहने तथा अन्य लोगों को भी शाकाहारी बनाने का संकल्प दिलाया गया। इस कार्यक्रम में 5 महिला अधिकारी (एस.डी. एम.) सम्मिलित हुई थीं जिन्होंने परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज के अमृत वचन रूपी सत्संग सुनकर अपनी प्रतिक्रिया देते हुए कहा कि 'हमने जिन्दगी में ऐसे आध्यात्मिक महापुरुष को पहली बार सुना है'।



रायपुर (छ.ग.) में शाकाहारी सम्मेलन का समापन करते हुए सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज

कोरोना काल में जरूरतमंदों को राशन वितरण

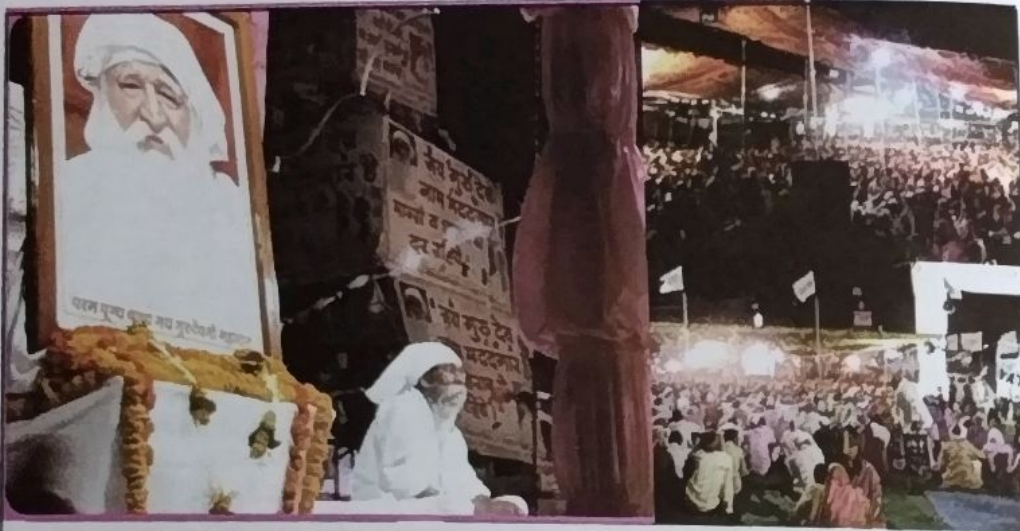
26 मार्च 2020 को विश्वव्यापी महामारी कोरोना के प्रकोप में संपूर्ण भारत लॉकडाउन के दौरान संस्था द्वारा 10,000 असहाय जरूरतमंद परिवारों को 1 महीने का राशन (आटा, दाल, चावल, तेल, शक्कर, नमक मसाले आदि) जिला प्रशासन के माध्यम से पहुंचवाया गया।



निःशुल्क वितरण के लिए राशन पैकिंग व स्टॉक करते हुए बाबा जयगुरुदेव संगत के प्रेमी

निःशुल्क उदरपूर्ति अभियान एवं भोजन भंडारा

19 मार्च 2017 को कांशीराम स्मृति उपवन, लखनऊ में आयोजित उ.प्र. विधान सभा 2017 के नवनिर्वाचित मुख्यमंत्री के शपथ ग्रहण समारोह में उपस्थित कार्यकर्ताओं, जनता व व्यवस्था में लगे पुलिस प्रशासन के कर्मचारियों, अधिकारियों को भोजन के 35 हजार पैकेट संस्था द्वारा निःशुल्क वितरित किये गये। 17 अप्रैल 2018 को पिंगलेश्वर गाँव में दो युवतियों के विवाह में सम्पूर्ण भोजन व्यवस्था की गई। 22 अप्रैल से 21 मई 2016 तक उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ (कुम्भ) में दो विशाल कैम्प लगाकर दो बार नामदान, सत्संग एवं पूरे समय निःशुल्क भोजन-भण्डारा एवं आवास की व्यवस्था की गई।



उज्जैन में आयोजित सिंहस्थ (कुम्भ) में निःशुल्क भोजन-भण्डारा

22 जनवरी 2018 को देवास म.प्र. में एक ही समाज के 33 जोड़ों के सामूहिक विवाह समारोह में संस्था द्वारा निःशुल्क भोजन की व्यवस्था की गयी, जिसमें लगभग 22 हजार लोगों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया।

प्रति वर्ष उज्जैन में पंचकोसी यात्राओं में शामिल धर्मावलम्बियों के लिए निःशुल्क जलपान, भोजन, चिकित्सा एवं आवास की व्यवस्था की जाती रही है।



उज्जैन में पंचकोसी यात्राओं में शामिल धर्मावलम्बियों के लिए निःशुल्क भोजन की व्यवस्था

माधव स्वीमिंग क्लब, उज्जैन में आयोजित तैराकी प्रशिक्षण के अंतिम तीन दिन 28, 30 एवं 31 मई 2017 को संस्था द्वारा नैतिक शिक्षा के पाठ एवं प्रशिक्षण के पश्चात् बच्चों, अभिभावकों एवं गुरुजनों को जलपान वितरण किया गया।



उज्जैन में आयोजित तैराकी प्रशिक्षण में बच्चों, अभिभावकों एवं गुरुजनों को भोजन वितरण

विगत 10 वर्षों में उज्जैन वाले बाबा उमाकान्त जी महाराज ने अपने प्रेमियों के सहयोग से 100 से अधिक आश्रम बनाए। इन आश्रमों में मुख्य रूप से होने वाली धार्मिक व आध्यात्मिक गतिविधियाँ जिनमें नियमित साधन-भजन, साप्ताहिक एवं मासिक सतसंग, जरूरतमंदों के लिए उदरपूर्ति एवं चिकित्सा व्यवस्था तथा आगंतुकों का सत्कार व भोजन की व्यवस्था की जाती है। इसके अतिरिक्त देश के अनेक धार्मिक व दार्शनिक स्थानों पर निःशुल्क भोजन भंडारे निरंतर चलाये जा रहे हैं जैसे अयोध्या, सोमनाथ, चित्रकूट, जगन्नाथपुरी, ओंकारेश्वर, बद्रीनाथ व केदारनाथ, खजुराहो आदि।

निःशुल्क अस्पताल

स्वास्थ्य सेवाओं के लिए उज्जैन आश्रम में 100 बेड का अस्पताल बनवाया जहाँ एलोपैथिक, आयुर्वेदिक, होम्योपैथिक, एक्यूप्रेसर, कलर थेरेपी तथा सुजोक चिकित्सा की सुविधा है, जो कि पूर्णतया निःशुल्क है। जिसमें कोई भी कैश काउंटर नहीं है।



निःशुल्क एम्बुलेन्स सेवा

उज्जैन आश्रम में निःशुल्क बाबा जयगुरुदेव रोगान्तक संस्थान एवं निःशुल्क चलने वाली एम्बुलेंस

इसके अतिरिक्त बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था द्वारा संचालित बाबा जयगुरुदेव निःशुल्क रोगान्तक संस्थान के अन्तर्गत उत्तरप्रदेश की राजधानी लखनऊ, राजस्थान की राजधानी जयपुर, राजस्थान के जोधपुर एवं हरियाणा के बावल रेवाड़ी में निःशुल्क चिकित्सालय संचालित किये जा रहे हैं।

एम्बुलेंस द्वारा चिकित्सा शिविर लगाकर निःशुल्क दवा वितरण



एम्बुलेंस द्वारा चिकित्सा शिविर लगाकर गांव-गांव निःशुल्क दवा का वितरण करते हुए प्रेमीजन

निःशुल्क ऑक्सीजन प्लांट

इसी क्रम में ऑक्सीजन प्लांट लगाकर जनहित की सेवा में मध्य प्रदेश सरकार को समर्पित किया।



आयुर्वेदिक धनवन्तरी चिकित्सालय, उज्जैन में मरीजों के लिए निःशुल्क ऑक्सीजन प्लांट

जरूरतमंदों को सर्दियों में कंबल वितरण

सर्दी के समय में पूरे देश में जरूरतमंदों को कंबल, टोपा, जैकेट आदि का निःशुल्क वितरण किया जाता है।



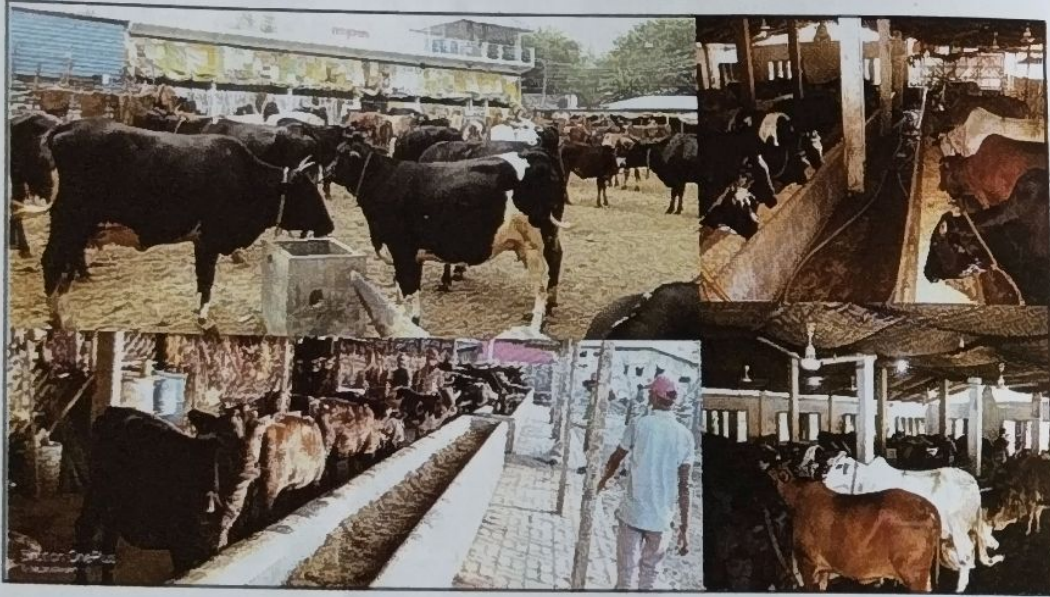
जरूरतमंदों को कंबल, टोपा, जैकेट आदि का निःशुल्क वितरण करते हुए प्रेमी

गौ-सेवा, गौ-रक्षा अभियान

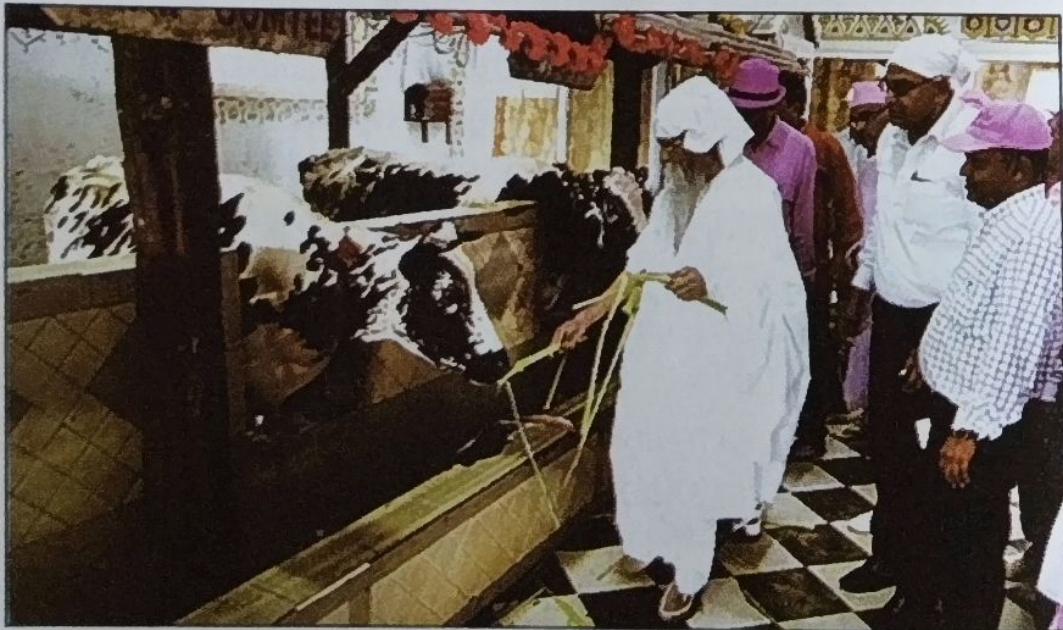
गऊवंश की रक्षा व सेवार्थ बाबा जयगुरुदेव गौशाला संचालित है। इस समय उज्जैन आश्रम की गौशाला में गायें, बछड़े, बैल और सांड काफी संख्या में मौजूद हैं।

गाय को राष्ट्रीय पशु का दर्जा देकर उसकी जान बचा लेने के संकल्प को पूरा करके ही दम लेने की ऐतिहासिक घोषणा, इन्हीं परम् सन्त बाबा उमाकांत जी महाराज ने गुरु पूर्णिमा 2014 के पावन पर्व पर जयपुर में की थी। इसी क्रम में गाय को राष्ट्रीय पशु बनाकर उसकी जान बचाने हेतु पूरे देश से प्रेमियों द्वारा कई लाख प्रार्थना पत्र प्रधानमंत्री कार्यालय भेजे जा चुके हैं। अपने सतसंग सम्बोधनों में पूज्य महाराज जी बहुत बार समझाते हैं कि पृथ्वी पर तीन माँ होती हैं धरती माता, गऊ माता और अपनी जन्म दात्री माता। धरती पर पाप न हो इसलिए बुराइयाँ छोड़ने की प्रेरणा देते रहते हैं। गऊ रक्षार्थ समझाते हैं कि 84 लाख योनियों का चक्कर काटती, कष्ट भोगती जीवात्मायें मनुष्य शरीर से पहले गाय और बैल के शरीर में रखी जाती हैं। अपनी आयु पूरी करके मरने पर गाय को

अगले जन्म में लड़की तथा बैल को अगले जन्म में लड़के का शरीर मिलता है इसलिए उनको अपनी मौत मरने देना चाहिए ताकि अगला जीवन अच्छा व शान्त रहे। वर्ना समय पूर्व गौवंश की हत्या कर देने पर शेष आयु प्रेत योनि में बिताने के कष्ट के कारण अतृप्त एवं चिड़चिड़े स्वभाव वाले बच्चे बच्चियाँ पैदा होते हैं, जिसका भोक्ता सारा समाज बनता है। इसी के साथ पूज्य महाराज जी का कहना है कि आगे भारत में गौ वंश की हत्या ही नहीं किसी भी पशु-पक्षी की हत्या नहीं होगी।



देश में सरकार एवं अन्य संस्थाओं द्वारा संचालित विभिन्न गऊ शालाओं में गायों के लिए चारा वितरण किया जाता है।



दिव्यांग सामूहिक विवाह में भोजन वितरण

उज्जैन में सर्व-धर्म सामूहिक विवाह समारोह में नव विवाहित दिव्यांग जोड़ों तथा समारोह में सहयोग करने वालों को उपहार एवं समारोह में सम्मिलित 25 हजार लोगों के भोजन की निःशुल्क व्यवस्था की गई।



सर्व-धर्म सामूहिक विवाह समारोह में नव विवाहित दिव्यांग जोड़ों के कार्यक्रम में निःशुल्क भोजन की व्यवस्था करते हुए प्रेमीजन

छात्रोन्नति वजीफा, अंगवस्त्र वितरण एवं प्रतिभा सम्मान

बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था द्वारा प्राथमिक शिक्षा से लेकर उच्च शिक्षा तक के मेधावी तथा आर्थिक रूप से कमजोर छात्र-छात्राओं के लिए छात्रोन्नति वजीफा, अंगवस्त्र, प्रतिभा सम्मान और उनके गुरुजनों व माता-पिता को सम्मानित करने के लिए समय-समय पर समारोह आयोजित किये जाते हैं।





छात्रोन्नती वजीफा, अंगवस्त्र वितरण एवं प्रतिभा सम्मान समारोह

प्रतिभा सम्मान अंतर्गत साइकिल वितरण समारोह



उज्जैन आश्रम में कक्षा 8 के प्रतिभाशाली छात्र/छात्राओं को साइकिल वितरण किया गया।

स्वरोजगार हेतु सिलाई मशीन का वितरण



स्वरोजगार हेतु महिलाओं को सिलाई मशीन का वितरण

स्वच्छता अभियान

तन, मन, धन को साफ, स्वच्छ एवं स्वस्थ रखने के साथ ही देश को साफ-स्वच्छ रखने के लिए बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था के सेवादार हर कार्यक्रमों में बढ़-चढ़कर मैदान को साफ-स्वच्छ रखकर समाज को एक प्रेरणादायक संदेश देते हैं।

जनजागरण काफिले

बाबा जयगुरुदेव जी महाराज के मिशन को पूरा करने के लिए, 'जयगुरुदेव' नाम के प्रचार-प्रसार एवं जीवों की रक्षा हेतु परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज द्वारा जन जागरण काफिले निकाले गये। जिसमें सर्वप्रथम लगभग 1000 गाड़ियों का 45 दिवसीय दक्षिण भारत काफिला जो 13 जनवरी 2014 को बाबा जयगुरुदेव आश्रम उज्जैन से निकाला गया और दक्षिण भारत के अनेक राज्यों में आध्यात्म की गंगा बहाते हुये 27 फरवरी 2014 को म.प्र. की राजधानी भोपाल में सम्पन्न हुआ।

युग परिवर्तन एवं जीव रक्षार्थ, परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज द्वारा रक्षा यात्रा काफिला 7 नवम्बर 2015 को धर्म की नगरी चित्रकूट से निकाला गया जिसमें 100 से अधिक गाड़ियाँ सम्मिलित थीं। जो उत्तर प्रदेश व बिहार में जन जागरण करता हुआ 15 दिन की यात्रा के पश्चात 22 नवम्बर 2015 को आगरा में पूर्ण हुआ।

इन्सानों को इसी जिन्दगी में खुदा का दीदार हो सकता है, रुहानी इल्म और खुदाई दौलत हासिल हो सकती है इसका पैगाम लेकर वक्त के मुर्शिद-ए-कामिल परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज ने म.प्र., राजस्थान व उ.प्र. में 21 दिन के रुहानी काफिला की मौज फरमाई। जो 2 अक्टूबर 2016 को बाबा जयगुरुदेव आश्रम उज्जैन से चलकर 23 अक्टूबर 2016 को बलिया उ.प्र. में सम्पन्न हुआ जिसमें 3000 मोटरसाइकिल तथा लगभग 500 चार पहिया वाहन निरंतर चले।

दुनिया के दुःख, तकलीफों व कष्टों को दूर करने के लिए परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज द्वारा 23 अक्टूबर 2017 को 31 दिवसीय दुःख निवारण काफिला निकाला गया जो म.प्र., गुजरात, महाराष्ट्र और उ.प्र. प्रान्तों में गाँव-गाँव, नगर-नगर में लोगों को दुःख निवारण का रास्ता बताते हुए 22 नवम्बर 2017 को ग्वालियर मेला मैदान म.प्र. में पूर्ण हुआ। इस काफिले में 256 चार पहिया वाहनों ने 4293 किलोमीटर की दूरी तय कर वर्ल्ड रिकार्ड बनाया साथ ही अनेकों दुपहिया वाहन भी निरंतर काफिले में चले।



शारीरिक, मानसिक और प्राकृतिक संकटों का मोचन अर्थात् निवारण करने के उद्देश्य से परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज द्वारा अपने अनुयायियों के साथ पाँचवा विशाल काफिला दक्षिण भारत की पवित्र भूमि पर निकाला गया जो संकट मोचन रुहानी काफिला बनकर दिनांक 7 जनवरी 2018 से म.प्र., महाराष्ट्र, कर्नाटक, तमिलनाडु, आन्ध्रप्रदेश, तेलंगाना, उड़ीसा होते हुये 41वें दिन छत्तीसगढ़ की राजधानी रायपुर के राष्ट्रीय कृषि मेला मैदान में 16 फरवरी 2018 को भारी सफलता के साथ सम्पन्न हुआ। इसी काफिले में तुमकूर (कर्नाटक) के श्री प्रसिद्ध गंगामठ के मुख्य प्रांगण में उपस्थित श्रद्धालुओं के साथ वहाँ अध्ययनरत लगभग 9500 विद्यार्थियों ने भी परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज के सत्संग व नामदान (दीक्षा / मंत्र) का लाभ लिया।



गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकार्ड में पंजीकृत 15 वर्ल्ड रिकॉर्ड्स

परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज द्वारा स्थापित बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था, उज्जैन (म.प्र.) द्वारा जन कल्याणकारी कार्य करते हुए 'गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड' में अभी तक 15 वर्ल्ड रिकॉर्ड (विश्व कीर्तिमान) दर्ज किये जा चुके हैं।



गोल्डन बुक ऑफ वर्ल्ड रिकॉर्ड में 15 वर्ल्ड रिकॉर्ड (विश्व कीर्तिमान)

लगभग 70 हजार लोगों को भोजन पैकेट का वितरण

दिनांक 11 अक्टूबर 2022 को उज्जैन में माननीय प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा महाकाल कॉरीडोर लोकार्पण के अवसर पर बाबा उमाकान्त जी महाराज (बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था उज्जैन) द्वारा भोजन प्रसादी के लगभग 70 हजार पैकेट बाँटे गये।



11 अक्टूबर 2022 को प्रधानमंत्री द्वारा उज्जैन महाकाल कॉरीडोर लोकार्पण के अवसर पर वितरण के लिए प्रेमीजन भोजन की पैकिंग करते हुए

देश-विदेश से उच्च पदों पर आसीन प्रतिष्ठित लोग, गणमान्य नेता, अधिकारी-कर्मचारी परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज से मिलने तथा दर्शन, दुआ, आशीर्वाद का लाभ लेने, समय-समय पर उज्जैन आश्रम तथा विभिन्न स्थानों पर होने वाले कार्यक्रमों में आते रहते हैं।



श्री अमित शाह (गृहमंत्री, भारत सरकार) और श्री जगदंबिका पाल (पूर्व मुख्यमंत्री, उ.प्र., वर्तमान सांसद) सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



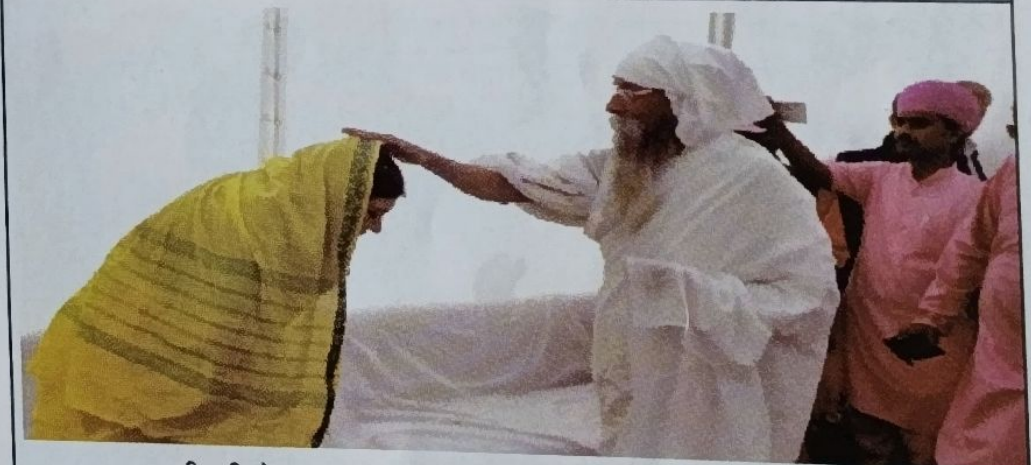
श्री मनीष सिसोदिया (उप मुख्यमंत्री, दिल्ली सरकार) सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्री केशव प्रसाद मौर्य (उप मुख्यमंत्री, उत्तर प्रदेश) सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



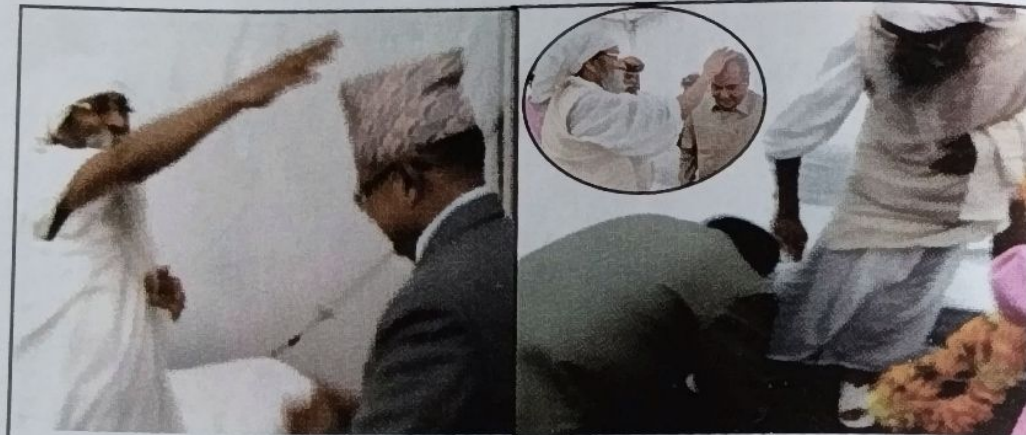
डॉ. हर्षवर्धन (केन्द्रीय स्वास्थ्य एवं परिवार कल्याण, विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी और पृथ्वी विज्ञान मंत्री, भारत सरकार) सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्रीमती मेनका गांधी (केन्द्रीय महिला एवं बाल विकास मंत्री) सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्री परमासिवम पिल्लै 'बालेन' व्यापूरी (पूर्व राष्ट्रपति, मॉरीशस) सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए



श्री माधव कुमार नेपाल
(पूर्व प्रधानमंत्री, नेपाल)
सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।

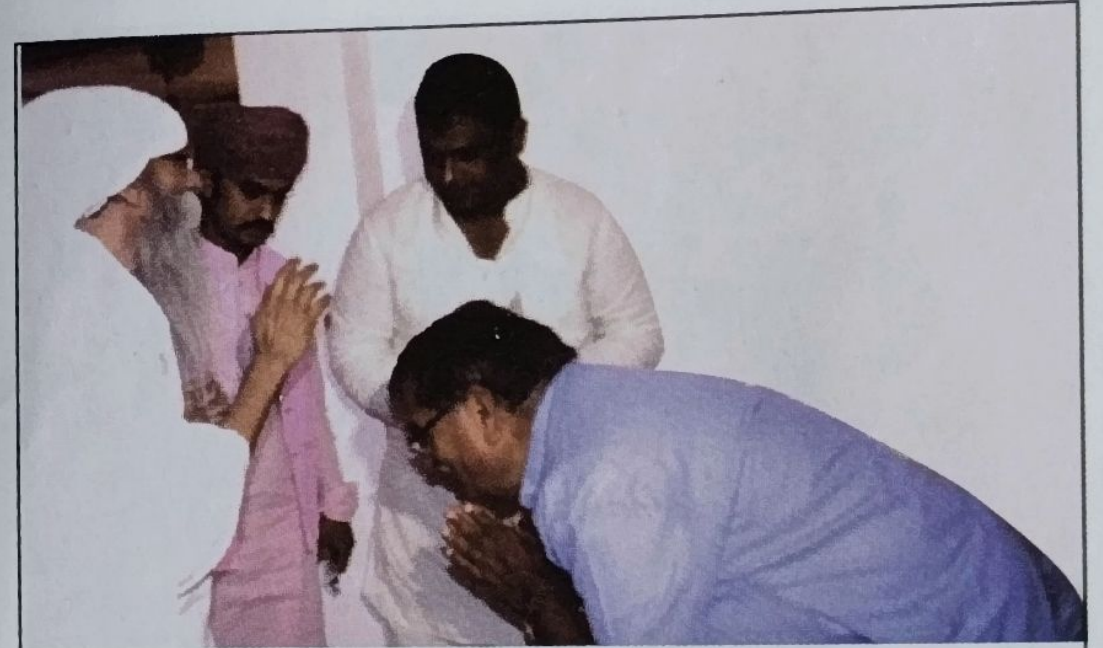
श्री नरेन्द्र सिंह तोमर (कृषि एवं किसान कल्याण मंत्री,
केन्द्रीय ग्रामीण विकास, पंचायती राज स्वच्छता
एवं पेयजल मंत्री भारत सरकार) सन्त बाबा
उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्री शिवराज सिंह चौहान (मुख्यमंत्री, म.प्र. शासन)
सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्री कैलाश विजयवर्गीय (राष्ट्रीय महासचिव, भारतीय जनता पार्टी)
सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



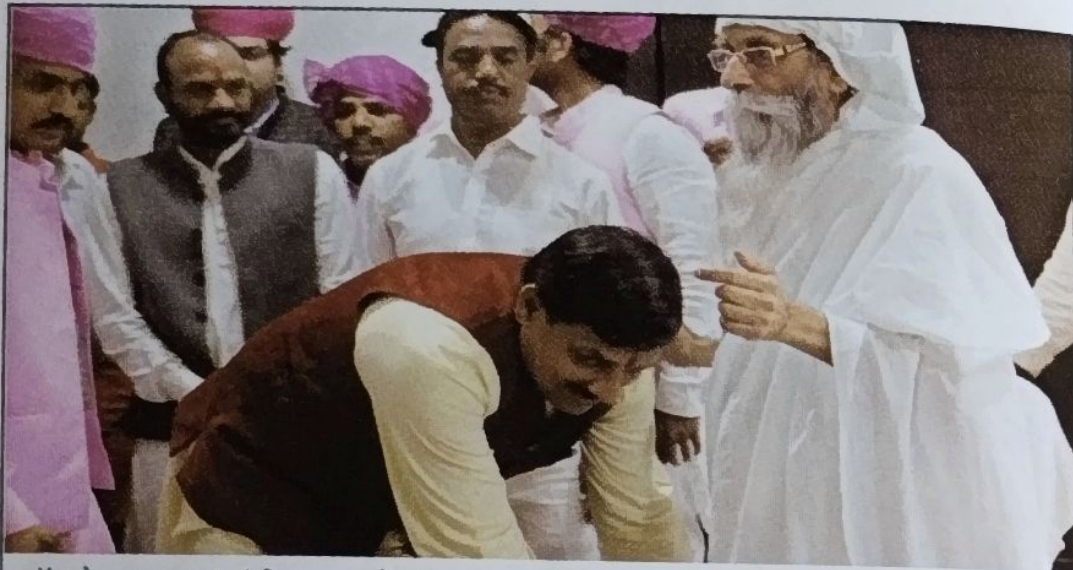
श्री गुलाबचन्द्र कटारिया (पूर्व गृहमंत्री, राजस्थान सरकार)
सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्री थावर चंद्र गहलोत (वर्तमान राज्यपाल कर्नाटक, पूर्व केन्द्रीय सामाजिक न्याय
व अधिकारिता मंत्री) सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्री के.पी. सेठिया
(सेवानिवृत्त वरिष्ठ
आई.ए.एस. अधिकारी, म.प्र.)
सन्त बाबा उमाकान्त जी
महाराज का
आशीर्वाद लेते हुए।



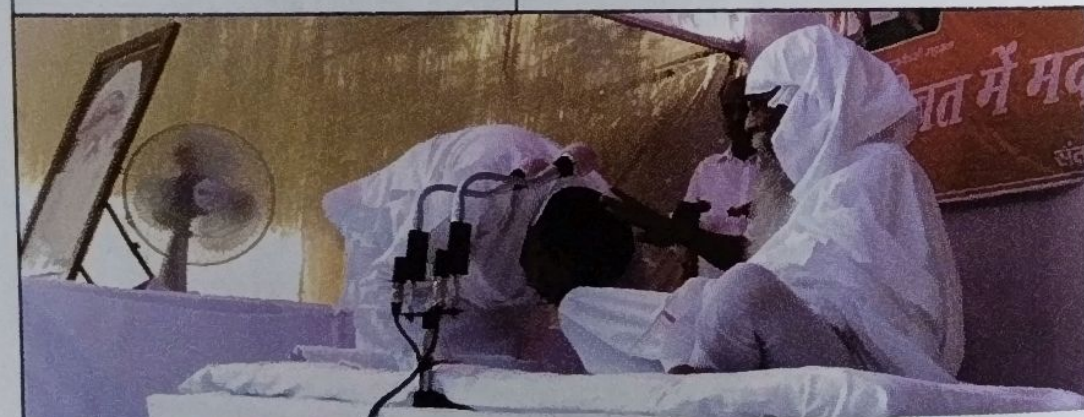
डॉ. मोहन यादव (मंत्री, मध्य प्रदेश) सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्री लाल बहादुर जायसवाल (रिटायर्ड जज)
सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का
आशीर्वाद लेते हुए।



श्री मुकुट बिहारी वर्मा (सहकारिता मंत्री, उ.प्र.)
सन्त बाबा उमाकान्त जी
महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



पूर्व विधायक, मंत्री, सांसद श्री दददन मिश्रा सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



श्री पारस जैन (पूर्व ऊर्जा मंत्री, मध्यप्रदेश)
सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज का आशीर्वाद लेते हुए।



दुबई के शेख साहब परम् सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज के साथ चर्चा करते हुए

आने वाले संकट से पहले ही आगाह कर बचाने का उपाय बताने वाले, इस समय के युगपुरुष, पूरे समर्थ सन्त सतगुरु, त्रिकालदर्शी उज्जैन वाले बाबा उमाकान्त जी महाराज का समाज के हर वर्ग के लिए सन्देश

देशभक्त बनें

देश भक्ति छोटी-मोटी भक्ति नहीं होती। याद करो देश भक्ति में भगत सिंह, चंद्रशेखर, अशफाक उल्ला खां, सुखदेव, राजेंद्र लाहिड़ी जैसे वीरों ने कुर्बानी दे दी। स्वार्थपरता में पड़कर, जिस धरती पर पैदा हुए, माटी में पलकर बड़े हुए, बुद्धि आई, विवेक आया, रोटी मिली, ऐसे देश की संपत्ति को अपना समझकर हड़ताल, तोड़फोड़, आंदोलन, आगजनी हरगिज मत करना क्योंकि इसके नुकसान से देश का विकास तो रुकता ही है और नुकसान का खामियाजा अपने को ही भोगना पड़ता है। सब लोग नियम-कानून का पालन करें। पालन कराने वाले अधिकारियों, कर्मचारियों का सहयोग व सम्मान करो और हमेशा देश की आन-बान-शान बनाए रखो। भारत विश्व का सिरमौर बने इस पर विचार-विमर्श व चिंतन करते रहो।

व्यापारी

अपने भाग्य (प्रारब्ध) पर भरोसा रखो। हमेशा जायज मुनाफा लो और उस मुनाफे का उपयोग परिवार की परवरिश अच्छे ढंग से साधन-सुविधा से करने के साथ ही साथ कुछ अंश गरीब गुरुबों के भोजन, वस्त्र व औषधि में भी खर्च कर दिया करो, इससे बरकत बढ़ जाएगी। मिलावट ना करो। मिलावट से कमाया हुआ धन आप अस्पताल में दे आओगे, मुकदमों में फंस जाओगे। दवा भी मिलावटी खाने को मिलेगी फिर खूब दवा खाओगे, आराम नहीं आएगा। जिस नाम को बढ़ाने के लिए मिलावट की, वह नाम भी खत्म हो जाएगा।

अधिकारी/कर्मचारी

जनता को अपना बच्चा मानकर सेवा (सर्विस) करें। ऐसा भाव रखें जैसे पिता अपने बच्चे का पालन पोषण, शिक्षा दीक्षा व उनके उत्तम भविष्य के लिए करता है। रिश्वतखोरी से हमेशा बचें। दिल दुखाकर लाया हुआ धन फलदाई नहीं होता है। गृहस्थ जीवन में गृह कलह, रोग,

मुकदमेबाजी, चारित्रिक पतन, दहेज व तलाक, खून-कतल जैसे मुकदमों में खर्च हो जाता है, ये गलत तरीके से लाया धन जहाँ भी लगता है नाश करता है। सेवाकाल के मिले कार्य को यथा सम्भव तुरन्त निपटा दिया करें। आप लोग अपने प्रारब्ध, भाग्य, बाहुबल और प्रभु पर पूरा विश्वास करो। अपना दिल-दिमाग लगा करके अपने विभाग को आगे बढ़ाओ।

शिक्षक गण

जिस तरह से पिता अपने बच्चे के अंदर उच्च भावना, उच्च विचार भरने, उच्च स्थान पाने का प्रयास करते हैं, ऐसे ही शिक्षकगणों का कुछ समय के लिए विद्याध्ययन के लिए माता-पिता के द्वारा सौंपे गए बच्चे-बच्चियों के लिए प्रयास होना चाहिए, न कि शारीरिक सुख, सुविधा के लिए धन कमाने के लिये। गुरु का स्थान सर्वोपरि रहा है, इसलिए मर्यादा बनाए रखना जरूरी है। विद्यालय के बच्चे हैं तो दूसरों के लेकिन उनको अपना बच्चा समझकर पढ़ाना चाहिए।

विद्यार्थी

बुरी सोहबत से बचें। किसी के कहने या देखा-देखी में नशे का सेवन तथा देशद्रोही काम कभी भी नहीं करें, शाकाहारी और चरित्रवान रहें, माता-पिता की सेवा करें, गुरुजन व बूढ़े-बुजुर्गों का सम्मान करें, मेहनत से पढ़ाई करें, ऊँचे विचार और ऊँची सोच रखें, तरक्की करने के लिए हमेशा अपने बड़ों के मेहनत तथा उनके चरित्र का अनुकरण करें। हड़ताल, तोड़फोड़, धरना, घेराव से किसी भी समस्या का समाधान होने वाला नहीं है, इसे भूलकर न करें, इसके नुकसान का खामियाजा अपने को ही भोगना पड़ता है इसलिए किसी के भी उकसावे में आकर ऐसा काम कभी भी नहीं करें। हिम्मत रखें कभी भी निराश न हों, कम खाना, कम बोलना, कम सोना, बर्दाश्त करना सदैव लाभकारी तो रहता ही है विकास का भी पथ प्रशस्त करता है।

माता-पिता बच्चों को शुरू से ही शिक्षा के साथ औद्योगिक शिक्षा भी सिखायें। व्यापार में कामयाबी तब मिलती जब जानकारी रहती है। सीखकर व्यापार करेंगे, कारखाना लगायेंगे तो कामयाब हो जायेंगे। काम मिल जाने पर बच्चे नौकरी के लिए नहीं भटकेंगे, अपना व्यवसाय कर लेंगे। पहली, दूसरी, तीसरी, पांचवी दर्जा से ही बच्चों को हुनर सिखाने की व्यवस्था बना दी जाए तो विदेशियों को बुलाकर व्यापार व कारखाने लगाने आदि की जरूरत नहीं पड़ेगी। सरकार प्रयास तो कर रही है

लेकिन थोड़ा और करे तो सोने में सुगंध जैसा हो जाएगा।

किसान

सर्वविदित है कि एक मजदूर से लेकर सेठ साहूकार, चपरासी से लेकर के प्रधानमंत्री, राष्ट्रपति तक को रोटी खिलाने वाले दिन-रात पसीना बहाकर के खेतों में काम करने वाले काश्तकारों के मेहनत के हिसाब से पैदा किए हुए अन्न की कीमत लागत के मुकाबले बहुत कम मिल पाती है, जरूरत पूरा ना होने पर कर्ज के बोझ से दबना पड़ता है। रोटी, रोजी, न्याय, सुरक्षा भरपूर ना मिल पाने की वजह से जीवन से ऊब कर आत्महत्या जैसा अज्ञानी कदम उठा ले रहे। परम् पूज्य बाबा उमाकान्त जी महाराज ने कहा कि इसके लिए हमको हार्दिक कष्ट है और मैं बराबर आपकी सुख सुविधा और शांति के लिए इस समय पर देश की व्यवस्था की बागडोर जिनके हाथ में है उनसे तो कहता ही रहता हूँ साथ ही साथ खुदा, भगवान से भी प्रार्थना करता रहता हूँ इसलिए भूमिजोतक काश्तकारों आप कभी भी आत्महत्या मत करना। यह मेरी बात मान लो और अपने खर्च पर अंकुश रखना, जुआ, शराब तथा व्यभिचार जैसे बुरे व्यसन से बचना, मालिक पर भरोसा रखना और परिस्थितियों का मुकाबला शांतिपूर्ण ढंग से कर लेना, कुछ समय में व्यवस्था सही हो जाने पर सब ठीक हो जाएगा। हमें मालूम है कि आपको बहुत मेहनत करनी पड़ती है लेकिन आगे दवाओं की कमी पड़ेगी तो जिनसे दवाएँ बनती हैं ऐसी जरूरत वाली चीजों पर ध्यान दो जैसे अदरक, हल्दी, घृतकुमारी, तुलसी आदि इनकी खेती करो। धान, गेहूँ की खेती में जो कम मुनाफा हुआ वह पूरा पड़ जाएगा। जिस क्षेत्र में जो चीज ज्यादा हो सकती है उसे करो। सरकार से प्रार्थना है कि जड़ी-बूटियों, गोमूत्र, गाय के गोबर आदि का, इन दवाओं का, लोगो को सिखवाकर उत्पादन शुरू कराये तो अच्छा रहेगा।

मजदूर

मजदूरों! दिन रात, धूप-छांव, भीषण गर्मी, ठंडी, बरसात न देखते हुए आश्रित परिवार व स्वयं के पापी पेट के लिए आप घर-घर, खेत-खेत जा करके मजदूरी मेहनत करते हो, आप इस चीज का ध्यान रखना कि आप लोग ईमानदारी से काम करना, आपके घर में मेहनत का ही पैसा आवे जिससे बरकत मिले, बच्चे तरक्की करें, घर में धन-लक्ष्मी की कमी न होने पाये। जिसके यहाँ भी काम करो अपने सेवा काम के द्वारा

उनका दिल को जीत लो, उनकी उम्मीद से भी ज्यादा अपने तन से सेवा कर के हक और हलाल का पैसा लाओ। मांस, मछली, अण्डा और नशे की चीजों से दूर रहना और शराब तो भूलकर भी मत पीना, बात मान लेने पर आपके साथ उस मालिक की दया जुड़ जाएगी।

राजनेता

राजनेताओं कुर्सी जाने में देर नहीं लगती है। सजग रहो। चाहे पक्ष के हो या विपक्ष के हो जनता विश्वास करके उम्मीद के साथ आपको प्रतिष्ठित स्थान पर भेजती है इसलिए जिस पद का आप शपथ लो, मेहनत ईमानदारी से सेवा भाव रखकर उसको पूरा करो। यह बात सत्य है कि यदि भारतीय संस्कृति आ गई तो पूरे विश्व को हरा-भरा बना देगी। अच्छी बातों को ही बताओ। अंग्रेज और मुसलमान शासकों में भी अच्छे-बुरे रहे हैं। अच्छों का नाम है, बुरों का कोई नाम लेना नहीं। पॉजिटिव बोलो। अपशब्दों का प्रयोग मत करो क्योंकि बुरा लगने वाला शब्द खून बहा देता है।

धर्मगुरु, पंडित, मुल्ला, पुजारी, मठाधीश, महंत

आप सबसे यह कहना है कि इस समय कलयुग में जड़ माया (धन-दौलत), चेतन माया (स्त्रियों) का बड़ा जोर है। गृहस्थ का अन्न खाने, उनका दान दिया हुआ धन उपयोग करने, दाताओं की भलाई के लिए सेवा-भजन न करने व कराने से दोनों मायाओं का जोर तेज हो जाता है, कारागार व नर्क का दरवाजा खुल जाता है इसलिए आप बुराइयों से बचने के लिए मौत और समरथ गुरु के वचन को हमेशा याद रखो। जो स्थान आपको मिला है, उसकी गरिमा को बनाए रखो। गृहस्थ का खाया हुआ नमक अदा करो उनके बीच जा करके उनका खान-पान, चाल-चलन, विचार, व्यवहार सही रखने का ईश्वरवादी, खुदापरस्त बनने का पाठ पढ़ाओ और इस मानव शरीर से सच्ची पूजा-इबादत कर के अंतर में जो देवी-देवताओं का दर्शन, खुदा का दीदार होता है उसको करो और लोगों को कराओ और अगर आपको तरीका नहीं मालूम है तो किसी जानकार के पास उनको जाने की प्रेरणा दो। याद रहे धृतराष्ट्र को 106 जन्म के पीछे के बुरे कर्म के कारण अंधा होना पड़ा था। चूक जाने पर आप को भी कहीं कर्मों की सजा न मिल जाए।

परम सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज के याद करने वाले वचन

- ❖ जातिवाद, भाई-भतीजावाद, भाषावाद, कौमवाद, एरियावाद खून बहा देता है इससे दूर रहना चाहिए। लोगों को जोड़ने का काम करो, तोड़ने का नहीं। निन्दा किसी की मत करो नहीं तो उसके पाप कर्मों से दब जाओगे।
- ❖ विश्व के सभी राजनेता, मजहबी धार्मिक गुरु तिफर्काबाजी, आतंकवाद, संभावित विश्व युद्ध नहीं हो ऐसा कार्य करें। इससे इबादत भजन के लिए मिलने वाले शरीर की रक्षा होगी और बर्बाद होने वाला धन देश के विकास में लगेगा।
- ❖ दिल दुखाकर लाया हुआ, बिना मेहनत का पैसा फलता-फूलता नहीं, बल्कि तकलीफ देता है।
- ❖ अधिकारी, व्यापारी व राजनेता भी नियम और कानून का पालन करें। गलत पैसा कमाने की इच्छा न रखें, अच्छे काम में एक दूसरे की मदद करें। देश और देश की जनता से प्रेम करें। नशामुक्त, शाकाहारी रहें। धर्म परायण भारत देश की मर्यादा को बनाए रखने के लिए सभी नेता एकजुट होकर के मानव हत्या, गौ हत्या, पशु-पक्षी की हत्या बंद करा दें जिससे लोग कुदरती कहर से बच सकें और सतयुग का प्रादुर्भाव धरती पर हो सके।
- ❖ याद कर लो जब कुदरत का खेल शुरू होगा तो एक दिन लोगों को मजबूर होकर शाकाहारी, नशामुक्त बनना ही पड़ेगा।
- ❖ अगर मांसाहार बंद नहीं हुआ तो ऐसी-ऐसी बीमारियाँ आयेंगी कि रात को बीमार हुए, सुबह खतम हो गए, जैसे कहते हो 'चट मंगनी पट ब्याह'।
- ❖ इतिहास उठाकर देख लो, युग परिवर्तन के समय महापुरुषों की बात न मानने पर बहुत से लोगों की जान चली गई। कलयुग में ही सतयुग आने का समय हो रहा है इसलिए लोगों को नशामुक्त, शाकाहारी, सदाचारी बनाओ जिससे खराब समय से बच जाएँ और सतयुग को अपनी आँखों से देख लें।
- ❖ कुदरत के बनाए नियम-कानून का पालन करने से सुख मिलेगा।
- ❖ ध्यान दें! बच्चे और बच्चियों के चरित्र का गिरना भारत जैसे धार्मिक देश के लिए खतरनाक होगा।

- ❖ यह मनुष्य शरीर जीते जी प्रभु दर्शन के लिए मिला है। समर्थ गुरु को खोजो, नाम की कमाई करके आत्मा का कल्याण कर लो।
- ❖ मृतक शरीर की मुक्ति तो श्मशान घाट पर हो जाती है परन्तु आत्मा की नहीं इसलिए जन्म-मरण की पीड़ा, नर्क-चौरासी के कष्ट से बचने के लिए वक्त के समर्थ सतगुरु के पास पंहुचकर आदिकाल का पांच नाम लेकर प्रार्थना, सुमिरन, ध्यान, भजन करके आत्मा की मुक्ति करानी चाहिए।
- ❖ गुरु के द्वारा बताये गए पांच नाम का सुमिरन, ध्यान, भजन नित्य करते रहो तथा जान-अनजान में मन, तन, वचन व धन से बन गए कर्मों को काटने के लिए मानव धर्म, सच्चा आध्यात्मिक धर्म का प्रचार करते रहो व करने में सहयोग करते रहो।
- ❖ याद रखो कि प्रकृति का यह नियम है— सन्त, अवतारी शक्तियाँ, कोई भी हो जब मनुष्य शरीर छोड़कर चले जाते हैं, वापस उसी शरीर में कभी नहीं आते।
- ❖ सन्त सतगुरु चोला छोड़ने से पहले जिसको नामदान देने का अधिकार देकर जाते हैं, उसके मुँह से सुनना जरूरी होता है।
- ❖ यह भी याद रखो! जो गुरु व गुरु के मिशन को आगे बढ़ाने में सहयोग करते हैं, इस दुनिया में उनको मनचाहा पद-प्रतिष्ठा देकर गुरु एहसान तो चुका देते हैं लेकिन जब एहसान खत्म हो जाता है तब उसको दुःख ही मिलता है। इसलिए सतगुरु से दुनिया की चीज नहीं मांगनी चाहिए।
- ❖ प्रारब्ध को आगे-पीछे करने की पावर वक्त के समर्थ संत सतगुरु के पास ही होती है।
- ❖ यह मनुष्य शरीर लाखों योनियों में भटकने के बाद मिला है। इसको पाने के लिए देवता, फरिश्ते तरसते रहते हैं। धन, बल, पद प्रतिष्ठा पाकर मौत और प्रभु को भूलना नहीं चाहिए।
- ❖ त्रिकालदर्शी से सन्तों का दर्जा ऊँचा होता है। जिसको आदि अंत का पता होता है वही सन्त होता है।
- ❖ सबसे बड़ा परोपकार जीवात्मा को शब्द का भोजन कराना है।

- ❖ गुरु की दया—दुआ लेकर लोक—परलोक बनाने के लिए जरूरी है कि—
तन मन से साँचा रहे, सतगुरु पकड़े बाँह।
काल कभी रोके नहीं, देवे राह बताय।।
- ❖ कितना भी बलवान धनवान उच्च पद पर आसीन राजा, महाराजा, बादशाह मनुष्य योनि में हो एक दिन सबको यह माल असबाब छोड़कर मृत्यु लोक से जाना पड़ेगा यानी मरना पड़ेगा इसीलिए तो कामिल मुर्शिद यानी समर्थ गुरु के पास जाकर लोग इल्म लेकर निजात (मुक्ति मोक्ष) लेते थे। यह तवारीख (इतिहास) में मिलता है।
- ❖ आजमाइश करके देख लो, जयगुरुदेव नाम प्रभु का ही है। जब मुसीबत में आदमी, देवी—देवता, फरिश्ते मददगार नहीं होंगे तब जयगुरुदेव नाम शाकाहारी, चरित्रवान, नशामुक्त लोगों के लिए मददगार होगा।
- ❖ ऐ इन्सान! तू आँख खोल। महात्मा फकीर तुझे बुला रहे हैं। उनके चले जाने के बाद तेरे दिल में यादगार और तड़प ही रह जाएगी।
- ❖ हिंसा, हत्या करने, कराने वालों को नकों में भारी सजा भोगनी पड़ती है।
- ❖ ऐ इन्सान! तूने जबान के स्वाद के लिए दया (रहम) छोड़ दिया। रहम करो रहमान मिलेंगे। दया करो भगवान मिलेंगे।।
- ❖ जानवरों की बलि चढ़ाना महापाप है। बलि काम, क्रोध, लोभ, मोह, अहंकार की चढ़ाओ।
- ❖ उत्थान धर्म से और पतन पाप कर्म करने से होता है।
- ❖ जयगुरुदेव नाम रट लो और लोगों को रटा दो। कोई भी शाकाहारी, सदाचारी, नशामुक्त व्यक्ति मुसीबत के समय जयगुरुदेव नाम बोलकर मदद ले सकता है।
- ❖ घड़ी बता रही है कि जीवन का एक—एक पल निकलता जा रहा है। सोचो! मौत के बाद कहाँ जाएंगे।
- ❖ अब ऐसा समय आ गया है कि आप सब लोग शाकाहारी, चरित्रवान, नशे से मुक्त, देश प्रेमी, धर्म प्रेमी बनकर कुदरती कहर का मुकाबला करो, नहीं तो अस्तित्व ही मिट जाएगा।

- ❖ भारत धर्म—परायण देश है, यहाँ धर्म का बड़ा महत्व है, इसलिए धर्म पर राजनीति नहीं होनी चाहिए बल्कि राजनीति में धर्म लाना चाहिए।
- ❖ याद रखो! भारत जैसे देश में जब माँ, बहन, बहू, बेटी की पहचान खत्म हो जाती है तब महाभारत जैसा विनाश होता है, इसलिए चरित्रवान बन जाओ।
- ❖ जल, पृथ्वी, अग्नि, वायु, आकाश ये देवता नाराज हो चुके हैं। सजा देने के लिए तैयार हैं। बचने के लिए सत्य, अहिंसा, परोपकार व सेवा धर्म को सब लोग धारण कर लें।
- ❖ हड़ताल, तोड़फोड़ आंदोलन, धरना, प्रदर्शन, आगजनी यह किसी समस्या का हल नहीं है। इनसे सदा दूर रहें। देशभक्ति सर्वोपरि भक्ति है।
- ❖ जाति—पाँति यानी कौम—कौमियत यह तो लोगों ने बना लिया, मालिक ने तो केवल इन्सान बनाया, तिफरकेबाजी करोगे तो उस मालिक को तकलीफ होगी।
- ❖ याद रहे! हर पशु—पक्षी व मनुष्य में मालिक की अंश जीवात्मा है। इनकी हत्या करने से कोई देवी देवता खुश नहीं हो सकते।
- ❖ आप लोग शाकाहारी, सदाचारी, ईमानदार व मेहनतकश बने रहें वना पाप से बोझिल ये धरती हिलेगी, भूकम्प आयेंगे, सूखा, बाढ़, तूफान, आगजनी का प्रकोप बहुत बढ़ जायेगा।
- ❖ मानव जीवन अनमोल है। इस समय पर मानव और मानवता को बचाने के लिए जाति, धर्म व हर तरह का वाद खत्म करके चिंतन, मंथन, विचार में सभी को लग जाना चाहिए।
- ❖ शराब और मांस के सेवन से खून गर्म और बेमेल होकर काम, क्रोध, लोभ, मोह और अहंकार तेज करके मनुष्य का नाश करा देता है। इसलिए नशामुक्त व शाकाहारी रहो।
- ❖ सदैव याद रखो! जो तुम कर रहे हो, उसको मालिक देख रहा है और जो कह रहे हो उसको वह सुन रहा है। एक दिन पल—पल का हिसाब तुमको देना पड़ेगा।
- ❖ आत्म धन के बराबर कोई भी धन नहीं है। इसी धन से अर्थ, धर्म, काम व मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है।

- ❖ जग के धन, मान व प्रतिष्ठा ने किसी का भी बराबर साथ नहीं दिया, इसमें लिप्त लोगों को धोखा ही मिला।
- ❖ लूट-पाट, रिश्वतखोरी का अन्न खिला करके परिवार व बच्चों का भविष्य खराब मत करो।
- ❖ ऐसा खराब समय आगे आ रहा है कि नास्तिक को भी खुदा, भगवान एक मिनट में याद आ जाएगा।
- ❖ साधु, महात्मा, पंडित, मुल्ला, मौलवी, फकीर, ग्रन्थी, पादरी, पुजारी, महन्त, मठाधीश, अब आपके बैठने का समय नहीं है, कुदरती कहर से बचने और बचाने में लग जाँ।
- ❖ नाम वह शक्ति है, पावर है जो समस्त संसार को चला रहा है। बेशुमार त्रिलोकियां, अगणित ब्रह्माण्ड उस नाम के आधार पर टिके हैं और विहार कर रहे हैं। कभी नाम की कमाई से चीजें प्राप्त होती थीं, अब भी हो सकती हैं बल्कि कलयुग में तो और आसानी से प्राप्त हो सकती हैं। जब आप सतसंग सुनेंगे तब सब बातें समझ में आ जाएंगी।
- ❖ दुनिया बनाने वाला ही जब मिल जाता है तो दुनिया की चीजों के लिए भागना नहीं पड़ता है, वह स्वतः ही मिल जाती हैं।
- ❖ सत्य, अहिंसा, परोपकार और सेवा रूपी सच्चे धर्म को अपना लोगे तो जाति-पांति, भाषावाद, क्षेत्रवाद यह सब खत्म हो जाएगा। फिर इन्सान को इन्सान से प्रेम हो जाएगा। मानव मंदिर जो मालिक को प्राप्त करने के लिए मिला, इसको कोई गिरायेगा नहीं यानी मानव हत्या के पाप से बच जायेगा।
- ❖ जो निभ्या और जिभ्या पर कन्ट्रोल रखता है, कहीं पर भी रहता है, सुखी रहता है। चरित्रहीन व्यक्ति बगैर मणि के सर्प की तरह से हो जाता है।
- ❖ यह मत सोचो की आँख बचा कर जो गलत काम कर रहे हैं उसे मालिक देख नहीं रहा है। उसके कैमरे से आप कहीं भी बच नहीं सकते।
- ❖ जैसे मकड़ी अपने बनाये जाल में फंसकर मर जाती है, ऐसे ही मनुष्य अपना घर बसाने के लिए धन इकट्ठा करने में ही फंसकर अपना जीवन रूपी अनमोल समय गंवा देता है।

- ❖ पहले के समय में महात्माओं के मार्गदर्शन से लोगों में इतना आत्मबल, आत्म शक्ति थी कि जिस चीज की इच्छा करते, वो पूरी हो जाती थी, जो आज भी संभव है।
- ❖ सतगुरु जब मिलते हैं तब रास्ता भी बताते हैं, रास्ते पर चलाते भी हैं और मंजिल तक पहुँचाते भी हैं।
- ❖ शंका जहाँ पर भी होती है वहाँ नाश होता है। इसलिए शंका का समाधान कर लेना चाहिए।
- ❖ सुख और दुःख अच्छे और बुरे कर्मों के ही फल हैं। जीव हत्या करोगे तो नर्कों की यातना भोगनी ही पड़ेगी।
- ❖ प्रारब्ध की एक-एक चीज मिलती है, सतसंग और संतों का समागम, भजन और पूजन ये प्रारब्ध में भी परिवर्तन ला देते हैं। परन्तु सन्त की दया प्रारब्ध को ही बदल देती है। जो नहीं भी मिलने का है, मिल जाता है।
- ❖ शराब अपराध और भ्रष्टाचार की जननी है। यदि शराब बन्द कर दी जाए तो कल से ही भ्रष्टाचार और अपराध कम होना शुरू हो जाएगा।
- ❖ संत सतगुरु की दया से तीसरी आंख खुल जाने पर खुदा, भगवान एक ही दिखते हैं।
- ❖ पहले के समय में सन्त, महात्मा, सतगुरु, गुरु से राय लेकर ही लोग काम करते थे। उनसे आशीर्वाद लेकर उनके निर्देश पर जब चलते थे तभी राजा व प्रजा का जीवन सुखी रहता था।
- ❖ हिंसा-हत्या करने वाला इंसान मालिक की नजरों से दूर हो जाता है। सुकून-शान्ति खो देता है, मुक्ति-मोक्ष तो उसके लिए संभव है ही नहीं।
- ❖ मनुष्य शरीर 84 लाख योनियों में चक्कर काटने के बाद भजन इबादत करने के लिए मालिक ने दिया है। यह मानव मंदिर है, इसी में वह मालिक मिलता है। ईंट और पत्थर के मंदिर, मस्जिद, गिरजाघर गिराने की माफी के बारे में तो कभी विचार भी हो सकता है लेकिन मानव मंदिर यानी जिस्मानी मस्जिद गिरा देने यानी मानव हत्या कर देने की माफी कभी होती ही नहीं है, सजा भोगनी ही पड़ती है।
- ❖ सन्त- सतगुरु किसी दाढ़ी-बाल व वेशभूषा का नाम नहीं होता, उनके

अन्दर आध्यात्मिक शक्ति होती है, उनके दर्शन व वाणी वचन से ही काफी लाभ मिल जाता है इसलिए तो पहले के समय में लोग उनके पास जाया करते थे और शिक्षा-दीक्षा लेकर निर्देश के अनुसार जब काम करते थे तो इसी गृहस्थ आश्रम में स्वर्ग जैसा आनन्द मिलता था। आज की तरह से लोग घर के झगड़ा झंझट से घर छोड़कर भागते नहीं थे, औरतें जल कर मरती नहीं थी, दहेज और तलाक के मुकदमे चलते ही नहीं थे।

- ❖ फकीर तो जात-ए-खुदा होते हैं। खुदाई आवाज सरजमीं पर फैलाते हैं। उनकी तकरीरों में शिरकत करने से ही निजात का रास्ता मिलता है।
- ❖ ये काल का देश है, सन्त इस देश में मालिक की दया-स्रोत लेकर मेहमान की तरह आते हैं और वे परम पिता व अपने निज घर की याद दिलाते हैं, मनाकर के, समझा-बुझा करके रास्ता बताकर, उस पर चला करके निजधाम पहुँचाकर मालामाल कर दिया करते हैं। जो लोग उनके उपदेश से अलग हो जाते हैं, उन पर काल, सन्त से आँख बचाकर अपना दाव लगा ही देता है।
- ❖ होशियार हो जाओ! थोड़ी सी नासमझी विश्व युद्ध का कारण बन सकती है। विश्व युद्ध को टालने के लिए जिम्मेदार समय से विचार-विमर्श कर लें। जन-धन की हानि से बचत हो सकती है। सच्चे संत के सतसंग में शरीक होने वालों को बीमारी तकलीफ में राहत तो मिलती ही है, श्रद्धा भाव, भक्ति के अनुसार कामना भी पूरी होती है।
- ❖ अपने देवी-देवता, गुरु को सम्मान दिलाने के लिए दूसरे के पीर पैगम्बर एवं आराध्य की निन्दा मत करो।
- ❖ शिवनेत्र सबके पास है। समर्थ गुरु की दया से खुल सकता है। याद रहे शंकर जी ने कभी भी नशे का सेवन नहीं किया इसलिए उनके नाम पर नशा करके उनको बदनाम मत करो। ये भी समझ लो बलि चढ़ाने से देवता खुश कभी नहीं होते हैं।
- ❖ कुछ समय के बाद गऊ हत्या बन्द हो जायेगी। देश में गऊ हत्या ही नहीं किसी भी पशु-पक्षी की हत्या नहीं होगी। लोगों की नीयत सही हो जायेगी। लोग नशामुक्त शाकाहारी हो जायेंगे। लोग दूसरे के धन को जहर और दूसरे की मां, बहन को अपनी मां, बहन की तरह से समझने लगेंगे।

- ❖ समर्थ गुरु के उपकार का बदला जीव बिना उनकी रहम के कभी चुका ही नहीं सकता।
- ❖ सेवा से इन्सान, इन्सान के दिल को तो जीत लेता ही है बल्कि खुदा की बनाई हुई चीजों को क्या, खुद खुदा को भी वश में कर लेता है। फकीर महात्माओं के कलाम कभी झूठे नहीं होते। वह जो बोल देते हैं वो होकर ही रहता है।
- ❖ अच्छे भाव रखो, अच्छा चिंतन करो, अच्छे लोगों के पास उठो- बैठो। इबादती यानी भजनानन्दी माताओं के बच्चे बुद्धिमान और नेक होते हैं।
- ❖ हमारे देश की नारियाँ देवी क्यों कहलायीं? क्योंकि समर्थ गुरु से रास्ता लेकर अपनी आत्मा को जगायीं।
- ❖ मन मनुष्य का राजा बन गया, जैसा वो कहता है, उसी तरह से शरीर के अंग काम करने लगते हैं। मन को वश में करने का चिमटा संतों के पास होता है।
- ❖ जिभ्या के स्वादी मनुष्य के अन्दर से दया खत्म हो जाती है और निभ्या के स्वादी मनुष्य के अन्दर से माँ बहन की पहचान खत्म हो जाती है।
- ❖ मनुष्य का मन कन्ट्रोल से बाहर होकर गलत कामों में लग गया, सही करने का तरीका केवल सन्तों के पास होता है।
- ❖ समर्थ गुरु द्वारा दिए गए नाम से ही उद्धार होता है।
- ❖ सन्तों की दया से अर्थ, धर्म, काम, मोक्ष की प्राप्ति होती है।
- ❖ जब दिव्य दृष्टि खुलेगी तब खुदा भगवान गॉड एक ही दिखेंगे।
- ❖ ख्वाहिशों की इबादत से सपने में भी वो मालिक मिलने वाला नहीं है।
- ❖ याद रहे ! सतसंग वचन से अच्छाई मिलती है व बुराई दूर हो जाती है।
- ❖ दिव्य दृष्टि खुलने का रास्ता बताने वाले गुरु के मिल जाने पर ही लोक-परलोक बनता है।
- ❖ गुनाहों का अम्बार फकीर के रहमत की नजर से ही जला करता है इसलिए उनके दरबार की हाजिरी जरूरी होती है।
- ❖ सदैव याद रखो ! झूठ बोली हुई बात कुछ समय के बाद भूल जाती है। इन्सान उसको छिपाने के लिए कई झूठ बोलता है फिर भी छिप नहीं पाती। सत्य बात हमेशा याद रहती है इसलिए सत्य ही बोलो।

- ❖ मनुष्य के बिना लगाम के चलने से समाज बर्बाद हो जायेगा।
- ❖ इस समय पर झोपड़ी से महल तक में रहने वाले लोग दुःखी हैं। मानसिक शान्ति नहीं है। लड़ाई-झगड़ा, बीमारी, प्रेत बाधा, कुदरती कहर। इनसे कैसे छुटकारा मिलेगा ? इसका रास्ता लोगों को नहीं मिल रहा है। गैर जानकारी में लोग भटकते रहते हैं, जान तक चली जाती है।
- ❖ आध्यात्मिक विज्ञान संसार के सभी विज्ञान से आगे है। इसका ज्ञान हो जाने पर हनुमान जी जैसी ताकत बदन में आ जाती है जो उड़कर गये और संजीवनी बूटी का पहाड़ उठाकर ले आये थे।
- ❖ श्वासों की पूंजी गिन करके खर्च करने के लिए मिली है। जो जैसा खर्च करता है, उसी तरह से उम्र कम व ज्यादा होती है।
- ❖ जीवात्मा के घाट पर बैठोगे तभी सच्चा आनन्द मिलेगा।
- ❖ आज अभी से ही शाकाहारी रहने तथा शराब नहीं पीने का संकल्प बना लीजिए।
- ❖ परमार्थ के तीन स्तम्भ सतसंग, सेवा और भजन।
- ❖ जयगुरुदेव नाम बोल करके कोई गलत काम मत करना वरना सजा मिल जाएगी।

चेतावनी

छोड़ कर संसार जब तू जायेगा। कोई न साथी तेरा साथ निभायेगा।।

अगर प्रभु का भजन किया ना, सतसंग किया ना दो घड़ियां।
यमदूत लगाकर तुमको, ले जायेंगे हथकड़िया,
कौन छुड़वायेगा... कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।

इस पेट भरन के खातिर, तू पाप कमाता निस-दिन।
शमशान में लकड़ी रखकर, तेरे आग लगेगी एक दिन,
खाक हो जायेगा... कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।

सतसंग की बहती गंगा, तू इसमें लगा ले गोता।
वरना इस दुनियाँ से, जाएगा एक दिन रोता-रोता,
फिर पछताएगा...कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।

क्या कहता मेरा-मेरा, यह दुनियाँ रैन बसेरा।
यहाँ कोई न रहने पाता, है चन्द दिनों का डेरा,
हंस उड़ जाएगा... कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।

गुरुदेव चरण में निस दिन, तू प्रीति लगाले बन्दे।
कट जाएगे सब तेरे, ये जन्म मरण के फन्दे,
पार हो जायेगा...कोई न साथी तेरा साथ निभाएगा।

छोड़ कर संसार जब तू जायेगा। कोई न साथी तेरा साथ निभायेगा।।

प्रार्थना

मेहर की नजर करो मेरी ओर,
दया की नजर करो मेरी ओर।

निशि दिन तुम्हें निहारूं सतगुरु,
जैसे चन्द्र चकोर।
दया की नजर करो मेरी ओर।

जानू न कौन भूल हुई तन से,
लियो हमसे मुख मोड़।
दया की नजर करो मेरी ओर।

बालक जानि चूक बिसराओ,
आया शरण अब मैं तोर।
दया की नजर करो मेरी ओर।

सदा दयालु स्वभाव तुम्हारा,
मेरी बेरियां कस भयहु कठोर।
दया की नजर करो मेरी ओर।

शरणागत की लाज न राखो,
मोसो पतित अब जायें केहिं ओर।
दया की नजर करो मेरी ओर।

अबकी बार उबार लेव जो,
फिर न धरब पग यहि मग ओर।

मेहर की नजर करो मेरी ओर,
दया की नजर करो मेरी ओर।

प्रार्थना

गुरु बचालोगे जिसको वो बच जायेगा।
फेर लगे नजर तो वो फंस जायेगा।।

तेरी नजरों में कोई करामात है,
हर समय होती अमृत की बरसात है।
उसको बिरला ही कोई समझ पायेगा।। गुरु ...

वो दया दृष्ट जिस पर भी हो जायेगी,
भाग्य उसकी तत्क्षण सुधर जायेगी।
व सुफल उसका नर तन भी हो जायेगा।। गुरु ...

बन चुका भार कोई हो संसार का,
फेर ली हो नजर जिससे सब प्यार का।
सब तरफ का भी हारा सम्हल जायेगा।। गुरु ...

तन में शक्ति नहीं धन भी रत्ती नहीं,
धर्म की भी तरफ भाव भक्ति नहीं।
मन दुराचार में भी जो रम जायेगा।। गुरु ...

जिसका तेरे सिवा और कोई नहीं,
रात दिन तेरी भक्ति में सोई नहीं।
अंग संग उसके तब तू ही हो जायेगा।। गुरु ...

जो नजर तेरी नजरों में डाले खड़ा,
धन्य वह हो गया भाग्यशाली बड़ा।
उसका यमदूत कुछ भी न कर पायेगा।। गुरु ...

दीन दुखिया हूँ मैं तेरे द्वारे पड़ा,
पाप से भर चुका है ये मेरा घड़ा।
जो किया है उसका वो फल पायेगा।। गुरु ...

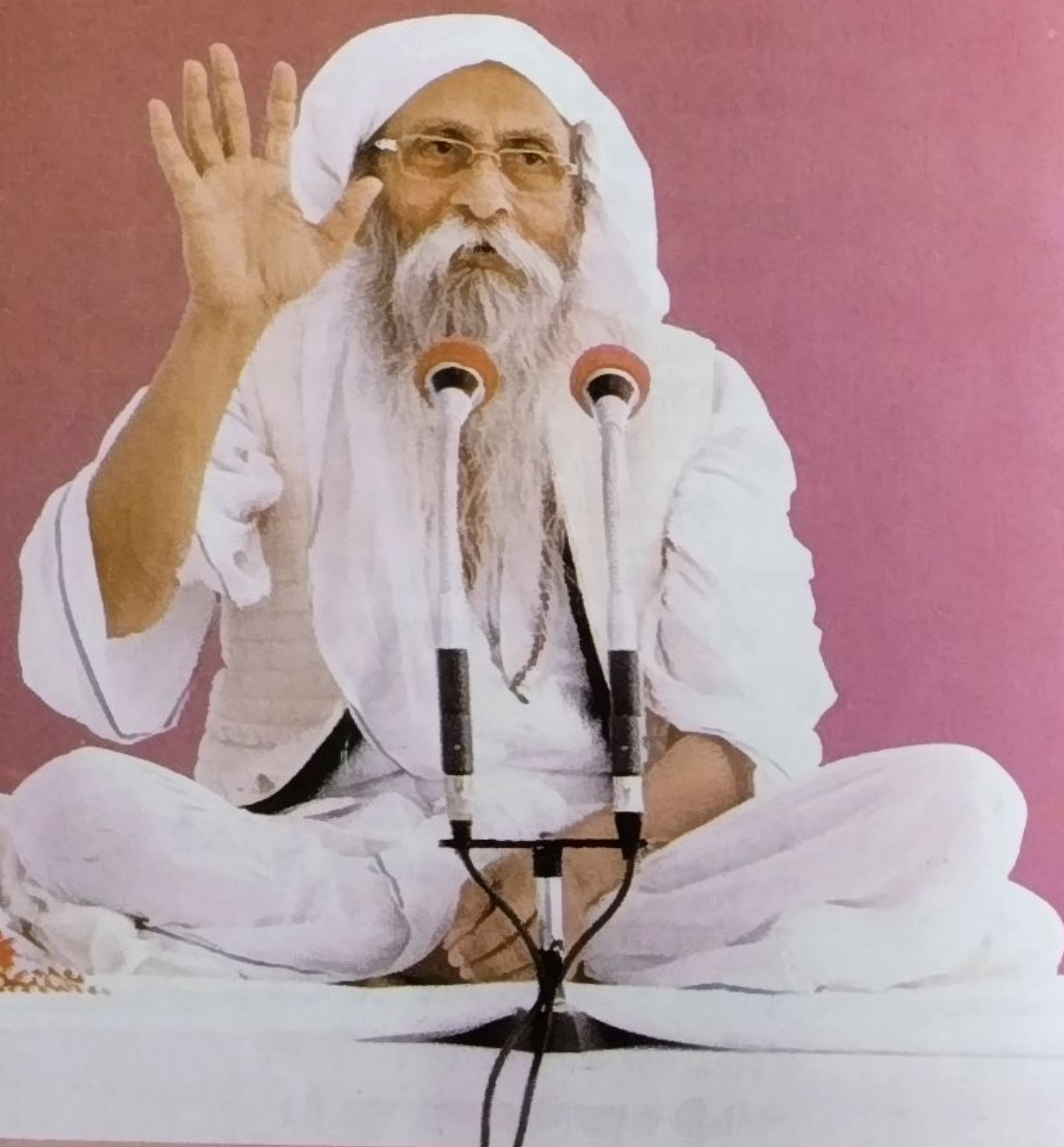
तेरे अतिरिक्त किसको पुकारूं गुरु,
तेरी मूरत सुरत में उतारूं गुरु।
नाम नौका पे चढ़ दास तर जायेगा।। गुरु ...

नाम तेरा मैं मुख से उचारुं प्रभु,
अपने अतःकरण से निहारुं प्रभु।
दीप जलते ही सब पाप धुल जायेगा ॥ गुरु ...
दीप के साथ ध्वनियां भी बजने लगीं,
स्वर्ग बैकुण्ठ की रील चलने लगी।
देव भी ऐसे साधु का गुण गायेगा ॥ गुरु ...
जयगुरुदेव भगवान का नाम है,
तुमको जो जान लेगा बना काम है।
देव मानव से भगवान हो जायेगा ॥ गुरु ...
गुरु बचालोगे जिसको वो बच जायेगा।
फेर लोगे नजर तो वो फंस जायेगा ॥

प्रार्थना

वही हैं वही हैं जो आये हुए हैं।
जमाने में हलचल मचाए हुए हैं।
गगन के फरिश्ते, तरसते हैं दम दम।
जमीं पे वो सैलाब लाए हुए हैं ॥
वहाँ जावो देखो, मची भीड़ कैसी ?
क्या उज्जैन के बाबा आए हुए हैं ?
अरे नाम उनका बताऊँ मैं कैसे ?
अनामी नगर से जो आए हुए हैं ॥
अजब-सी वो रौनक, सबसे जुदा है।
तो नजरो में जादू छिपाए हुए हैं।
अमृत की वर्षा है नजरें इनायत।
वो बन्दों की बस्ती में आए हुए हैं ॥
बाबा जयगुरुदेव के जानशीन हैं वो सुन लो।
बाबाजी महाराज उज्जैन कहाये हुए हैं।
जयगुरुदेव नाम प्रभु का, दुनिया को है बताया।
वो उज्जैन में कुटिया बनाए हुए हैं ॥

कलयुग में सतयुग बुलाने की खातिर।
वो सतसंग सागर बहाए हुए हैं।
वो बन्दों की बस्ती में बन्दा बने हैं।
वो पहचान अपनी छिपाये हुए हैं ॥
वो पहचान जिस्मानी रुहानी अपनी।
मुरीदों को अपने बताए हुए हैं।
छिड़ा प्रश्न शंकित मनो में है अब ये।
लगाओ पता कौन आए हुए हैं ॥
पता क्या लगाओगे उनका ऐ नादों।
पता है जिनको वे बताए हुए हैं।
इशारों में सब कुछ बताते हैं बाबा।
बे-पते का पता लगाए हुए हैं ॥
गगन पर, धरा पर, पवन में, सुमन में।
बड़ी गर्म चर्चा वो आए हुए हैं।
बड़ी उनकी शोहरत और महिमा प्रेमियों में।
रहनुमा वो रहमत के आए हुए हैं ॥
गुनहगार दुनिया के कदमों पे उनके।
दे रहमत की बख्शिष बचाए हुए हैं।
वो नगमासरा इश्क से खींच अपने।
बुतों को भी वे होश लाए हुए हैं ॥
प्रदर्शन नहीं आत्म-दर्शन जिन्हें है।
वही फिर गुलाबी पहनाए हुए हैं।
किया दुनिया में रोशन गुरु के मिशन को।
वो आए हैं, सबको बुलाए हुए हैं ॥
कटा लो करम, कर दें नज़रे-इनायत तो।
दया का समंदर वो लाए हुए हैं।
अभी भी समय है बनो सदाचारी-शाकाहारी।
नाम दौलत वो चहुँदिशि लुटाए हुए हैं ॥



ये वही बाबा उमाकान्त जी महाराज हैं, जिनका दर्शन करने, सतसंग सुनने व उनके बताये रास्ते पर चलने से दुःख तकलीफों में आराम मिलने लगता है। मौका मिले तो आप भी एक बार इन बाबा उमाकान्त जी महाराज से जरूर मिलिए और इनसे नाम लेकर, घर बैठे इसी मनुष्य शरीर रूपी मंदिर में देवी-देवता व कुल मालिक (प्रभु) का दर्शन करके सुख शांति व मुक्ति मोक्ष के अधिकारी बन जाइये।

हाथ जोड़कर विनय हमारी,
तजो नशा बनो शाकाहारी।
छोड़ो व्यभिचार बनो ब्रह्मचारी,
सतयुग लाने की करो तैयारी ॥

गाय को राष्ट्रीय पशु बनाओ,
धरती पर सतयुग ले आओ।
सुख-शांति का बिगुल बजाओ,
प्रभु दर्शन कर मुक्ति पाओ ॥

जिस दिन देश में गऊ हत्या बंद करने की घोषणा हो जाएगी, उसी दिन से सतयुग की किरण इस धरती पर पड़ने लग जाएगी और भारत में जब गऊ हत्या बंद हो जाएगी तब विदेशी लोग भी गऊ हत्या बंद कराने का मन बना लेंगे। धीरे-धीरे पूरे विश्व में गौ हत्या बंद हो जायेगी क्योंकि कलयुग में ही सतयुग कुछ समय के लिए आयेगा। सतयुग में गौ हत्या ही नहीं बल्कि किसी भी पशु-पक्षी की हत्या नहीं होगी। महात्माओं की वाणी अकाट्य होती है इसलिए यकीन करो और आप सब अंडा, मछली, मांस, शराब छोड़कर सतयुग के लायक बन जाओ जिससे आप भी सतयुग का आनंद ले सकें।

-परम सन्त बाबा उमाकान्त जी महाराज

जय गुरु देव



जयगुरुदेव जयगुरुदेव
जयगुरुदेव जय जयगुरुदेव

की नाम ध्वनि रोज सुबह-शाम सपरिवार
विश्वास के साथ कुछ दिन बोलिए,
फिर फायदा देखिए ।

मुख्यालय का पता : बाबा जयगुरुदेव धर्म विकास संस्था,
पिंगलेश्वर रेलवे स्टेशन के सामने, मक्सी रोड, उज्जैन (म.प्र.)

☎ 9575600700, 9754700200 🌐 📺 jaigurudevukm